हिन्दी
देवशक्ति
अद्भुत दिव्यास्त्र
5
Ring of Atlantis
शिवेन्द्र सूर्यवंशी

देवशक्ति

अद्भुत दिव्यास्त्र

Shivendra Suryavanshi

लेखक की कलम से

ॐ नमः शिवाय

“निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं । गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।

करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥“

"अर्थात् निराकार, ओंकार के मूल, तुरीय वाणी, ज्ञान और इन्द्रियों से परे, कैलाशपति, विकराल, महाकाल के भी काल, कृपालु, गुणों के धाम, संसार से परे परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूं।"

दोस्तों इन्हीं कथनों के साथ मैं शिवेन्द्र सूर्यवंशी, एक बार फिर आपके समक्ष, अपनी नई पुस्तक लेकर उपस्थित हूं। दोस्तों यह पुस्तक 'रिंग ऑफ़ अटलांटिस' सीरीज की पांचवी पुस्तक है। दोस्तों सर्वप्रथम मैं आप सभी का दिल से आभारी हूं कि आपने इतने कम समय में, मेरे जैसे एक नये लेखक को इतना सारा प्यार दिया। मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार आपने मेरी पिछली पुस्तकों को प्यार और सम्मान दिया, उसी प्रकार इस पुस्तक को भी, अपने नेत्रों की कृपादृष्टि से अभिसिंचित कर मुझे उत्साहित करते रहेंगे।

दोस्तों आज से 200 वर्ष पहले तक सभी लोग देवताओं पर विश्वास करते थे, उन्हें मानते थे और उनकी हृदय से पूजा करते थे। पर जैसे-जैसे विज्ञान अपने पाँव पसारता गया, ईश्वर की तस्वीर लोगों के समक्ष धुंधली होती चली गई। बहुत से मनुष्यों को लगने लगा कि इस ब्रह्मांड में ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है, वह सभी तो एक जैविक रचना हैं। उधर हमारे कुछ धर्मगुरुओं के द्वारा गढ़े गए, झूठे मिथकों ने हमारे अविश्वास को और भी बढ़ा दिया। हमारे मस्तिष्क में ईश्वर के लिये गलत धारणाएं बनने लगीं। हमें सभी ईश्वरीय कथाएं कपोल-कल्पित लगने लगीं। विज्ञान का पर्दा हमारी आँखों पर पड़ जाने के बाद, हमने ये भी नहीं सोचा कि क्या हम अभी तक सप्त तत्व को समझ पायें हैं? अग्नि क्या है? क्या जल मात्र एक तत्व है? क्या हवा के कण सिर्फ वायुमण्डल में घूमने के लिये बने हैं? क्या धरती के मूल सिद्धान्तों को हम पूर्णतया समझ चुके हैं? क्या ध्वनि हमारी श्रवणेन्द्रिय में घूमने वाली एक

ऊर्जा मात्र है? प्रकाश और आकाश के बारे में तो बात ही क्या करना? उनकी तो जानकारी भी हमारे पास नगण्य है। हम अभी आत्मा और मानव शरीर को पूर्णतया नहीं समझे हैं ईश्वर पर प्रश्नचिंह कैसे उठा सकते हैं? क्या कुछ भद्रजनों के द्वारा लिखी गई, काल्पनिक कहानियों से, हम ईश्वर के अस्तित्व को नकार सकते हैं? इस अनन्त ब्रह्मांड के आकार के आगे, हम एक धूल के कण जितने बड़े भी नहीं हैं। इसलिये हे विज्ञान के पुजारियों, झूठी कहानियों पर विश्वास मत करो ... .परंतु ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती भी मत दो।....... वह निराकार है........ वह ब्रह्मांड के कण-कण में व्याप्त है........ उसको ढूंढने के लिये हमको अपने धर्मस्थलों पर जाने की जरुरत नहीं है, उसे ढूंढने के लिये तो हमारा मन और विश्वास ही काफी है।

तो दोस्तों इन शब्दों के साथ मैं अपना यह लेखन यहीं समाप्त करूंगा।

शेष अगली पुस्तक में में ......

आपका दोस्त

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

०००००

प्राक्कथन

शक्ति- एक ऐसा शब्द जिसे प्राप्त करने के लिये, मनुष्य, देवता, दैत्य ही नहीं अपितु अंतरिक्ष के जीव भी सदैव लालायित रहते हैं। शक्ति का पर्याय स्वामित्व से जुड़ता है, इसलिये ब्रह्मांड के सभी जीव शक्ति को प्राप्त कर, स्वयं को श्रेष्ठ दिखाना चाहते हैं। वन में मौजूद एक सिंह भी, अन्य वन्य प्राणियों के समक्ष अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने से नहीं चूकता। ठीक उसी प्रकार कुछ देवता भी मनुष्यों के समक्ष, अपना शक्ति प्रदर्शन कर, उनमें भय की भावना उत्पन्न करते रहते हैं। जैसे देवराज इंद्र के द्वारा जलप्रलय लाना या सूर्यदेव के द्वारा सूखे की स्थिति उत्पन्न कर देना। यह सब भी शक्ति प्रदर्शन के अद्वितीय उदाहरण हैं। दैत्यों ने हमेशा त्रिदेवों से ही शक्ति प्राप्त कर, उनका प्रयोग देवताओं के ही विरुद्ध किया है। इन शक्तियों को प्राप्त करने के लिये, मनुष्यों ने भी घोर तप किये हैं।

कुछ ऐसी ही देवशक्तियों को, पृथ्वी की सुरक्षा के लिये, देवताओं ने पृथ्वी के अलग-अलग भागों में छिपा दिया, जिससे समय आने पर कुछ दिव्य मानव, उन देव शक्तियों को धारण कर, पृथ्वी की सुरक्षा का भार उठा सकें। ऐसे ही देवशक्ति धारक कुछ विलक्षण मनुष्य बाद में ब्रह्मांड रक्षक कहलाये।

समयचक्र- डेल्फानो ग्रह समाप्त होने के बाद, वहां के राजा गिरोट ने अपनी सबसे अद्वितीय रचना समयचक्र को पृथ्वी पर फेंक दिया, जो कि ब्लैक होल के सिद्धांतों पर कार्य करती थी। यह समयचक्र पृथ्वी पर आने के 20 वर्षों तक सुप्तावस्था में रहा। एक दिन अचानक ही यह समयचक्र अपनी शक्तियों से, समय के कई आयामों को बांधने की कोशिश करने लगा। इस समयचक्र के पास समय और ब्रह्मांड में यात्रा करने की अद्भुत शक्तियां थीं, पर इसी अद्भुत शक्तियों को प्राप्त करने के लिये कुछ अंतरिक्ष के जीव भी पृथ्वी पर आ गये। उन जीवों के पास दूसरी आकाशगंगा की अनोखी शक्तियां थीं, जो हमारे विज्ञान की कल्पनाओं से भी परे थीं।

इसी के साथ शुरु हुआ एक अनोखा टकराव, जिससे अनगिनत प्रश्नों की एक श्रृंखला खड़ी हो गई

1) क्या व्योम और त्रिकाली, विद्युम्ना की जलशक्ति से बने मायाजाल में, देवराज इंद्र के वज्र से बच सके?

2) क्या हुआ जब कालकूट विष से बने नीलाभ को ब्रह्मांड में, महादेव के पंचमुखी दर्शन हुए?

3) क्या हुआ जब ओरस, स्वयं अपने ही समयचक्र के जाल में फंसकर समययात्रा कर बैठा?

4) क्या सुयश अपने साथियों के साथ तिलिस्मा के मायाजाल में घूम रही पांचों इन्द्रियों को परास्त कर सका?

5) कौन था अष्टकोण में छिपा वह दिव्य बालक, जिसके बारे में कोई नहीं जानता था?

6) क्या हुआ जब देवशक्ति धारक माया का टकराव, ग्रीक देवताओं से हुआ?

7) क्या था महादेव की अमरकथा का रहस्य, जिसे महादेव ने देवी पार्वती को सुनाया था?

8) वीरभद्र और भद्रकाली ने किस प्रकार से नीलाभ की परीक्षा ली?

9) क्या धनवंतरी के आयुर्वेद में सभी रोगों का निदान छिपा था?

10) क्या देवशक्तिधारक योद्धा, डार्क मैटर, नेबुला, ब्लैक होल जैसी शक्तियों से पृथ्वी की रक्षा कर पाये?

तो आइये दोस्तों कुछ ऐसे ही सवालों का जवाब जानने के लिये पढ़ते हैं, विज्ञान और ईश्वरीय शक्ति के मध्य, रहस्य के ताने-बाने से बुना एक ऐसा अविस्मरणीय कथानक, जो आपको मानव शरीर और इन्द्रियों का अद्भुत ज्ञान देगा, जिसका नाम है

"देवशक्ति- अद्भुत दिव्यास्त्र"

◦◦◦◦◦

चैपटर-1

इंद्रसभा

20,005 वर्ष पहले ....

देवराज इंद्र का दरबार, स्वर्गलोक

स्वर्गलोक- एक ऐसा स्थान, जहां जीवित रहते कोई भी मनुष्य नहीं जाना चाहता, पर मृत्यु के उपरांत हर मनुष्य वहीं रहने की कामना करता है।

स्वर्गलोक- पृथ्वी का एक ऐसा भूभाग, जिसके बारे में कोई नहीं जानता, कि वह कहां पर है? एक ऐसा स्थान, जहां देवताओं का निवास है। वह देवता जिन्हें आदित्य भी कहते हैं।

त्रिदेवों ने देवताओं का राजा इंद्र को चुना था।

सूर्य, अग्नि, पवन, वरुण, यम आदि सभी देवता इंद्र के साथ मिलकर मनुष्यों की सहायता करते हैं।

इस समय स्वर्गलोक में इंद्र की सभा लगी हुई थी।

सभी देवता, सिंहासनों पर बैठे हुए थे, पर किसी को यह नहीं पता था कि उन्हें आज यहां किसलिये बुलाया गया है?

बस उन्हें इतना बताया गया था, कि यह सभा त्रिदेवों के कहने पर बुलाई गई है, इसलिये सभी धीरे-धीरे आपस में बातें कर रहे थे।

इंद्र भी सभा के मध्य, अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे। पर इस समय इंद्र के चेहरे की बेचैनी, ये साफ बता रही थी, कि इस सभा का उद्देश्य उन्हें भी नहीं पता है।

सभी के चेहरे पर बेचैनी एवं असमंजस के भाव थे।

आखिरकार गणेश से रहा नहीं गया और उसने देवराज इंद्र से पूछ लिया- “देवराज, हमें यहां बैठे बहुत समय बीत गया है, पर आप तो कुछ बता ही नहीं रहे, कि आपने हम सभी को यहां किसलिये बुलाया है?"

गणेश के शब्द सुन इंद्र डर गये। अब वो ये भी नहीं कह सकते थे कि उन्हें भी नहीं पता, नहीं तो सभी देवताओं के सामने उनका अपमान हो जाता।

अतः इंद्र ने अपने मस्तिष्क का प्रयोग करते हुए कहा- “कुछ देर और प्रतीक्षा करो गणेश, त्रिदेवों ने हमें कुछ भी बताने से मना किया है, बस वह अब आते ही होंगे। उनके आते ही हम आपको सबकुछ बता देंगे।

इंद्र की बात सुन कार्तिकेय जोर से हंस दिया, वो इंद्र का चेहरा देखकर ही जान गया था, कि इंद्र को कुछ नहीं पता?

तभी सभा में एक तीव्र प्रकाशपुंज उत्पन्न हुआ और उस प्रकाशपुंज से त्रिदेव प्रकट हो गये।

त्रिदेव के आगमन से, सभी के वार्तालापों का भ्रमरगुंजन स्वतः ही समाप्त हो गया।

सभी त्रिदेवों के सम्मान में अपने-अपने सिंहासन से खड़े हो गये।

त्रिदेवों के साथ नीलाभ और माया भी थे।

गणेश ने माया को देखकर, अपनी पलकें जोर से झपकाईं। यह एक प्रकार का शरारत भरा अभिवादन था।

माया ने भी मुस्कुराते हुए अपनी पलकें झपका कर गणेश का अभिवादन स्वीकार कर लिया।

माया को देखकर हनुमान को भी वह नन्हा यति याद आ गया। नन्हें यति को यादकर हनुमान एक पल को सिहर उठे।

त्रिदेवों के साथ नीलाभ और माया को देखकर, इंद्र के चेहरे पर आश्चर्य के भाव आ गये, वह समझ गये कि अवश्य ही कोई अत्यंत महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि त्रिदेव आज तक किसी को भी लेकर इंद्रसभा में नहीं आये थे?

कुछ ही देर में सभी ने आसन ग्रहण कर लिया।

अब सभी देवताओं की नजर त्रिदेवों पर थी, सभी साँस रोके बस उन्हें ही देखे जा रहे थे।

भगवान विष्णु ने महादेव को बोलने का इशारा किया।

“देवों आप सभी को भली-भांति पता है, कि पृथ्वी पर युगों को 4 भागों में बांटा गया है- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलयुग।” महादेव ने कहा- “पहले 3 युगों में मनुष्य हमारे अस्तित्व को स्वीकार करता है, वह वेद के माध्यम से देवताओं की आराधना करता है, जिसके फलस्वरुप देवता उसे आशीर्वाद देते हैं और उसे असुरों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। परंतु कलयुग में मनुष्य हमारे अस्तित्व को नकार देता है। हम स्वयं भी इन्हीं कारणों से मनुष्यों से दूरी बना लेते हैं, परंतु फिर भी हमें उनकी सुरक्षा का दायित्व लेना पड़ता है। कलयुग में मनुष्यों की तकनीक इतनी ज्यादा उन्नत हो जाती है कि वह ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों की ओर भी झांकना शुरु कर देते हैं और मनुष्यों की यह क्रिया, प्रत्येक बार उनके विनाश का कारण बनती है। ऐसे समय में हम स्वयं भी, उन मनुष्यों की किसी भी प्रकार से सुरक्षा नहीं कर पाते। इसलिये हम त्रिदेवों ने कलयुग में भी मनुष्यों की रक्षा के लिये एक अनूठा उपाय सोचा है। हम चाहते हैं कि हम सभी देवता, अपनी एक देवशक्ति को किसी ऐसे मनुष्य को प्रदान करें, जो कि ब्रह्मांड रक्षक बनकर कलयुग में, हमारी अनुपस्थिति में भी, मनुष्यों की रक्षा कर सके।"

यह कहकर महादेव शांत हो गये।

“पर महादेव, हम ऐसे मनुष्यों का चयन कैसे करेंगे? जो हमारी शक्ति को धारण कर ब्रह्मांड रक्षक का कार्य भली-भांति कर सके।” इंद्र ने परेशान होते हुए कहा।

“और महादेव ऐसे मनुष्यों के चयन में तो हजारों वर्ष लग सकते हैं और फिर हम उनकी परीक्षा कैसे लेंगे? कि वह देवशक्ति को धारण करने योग्य हैं कि नहीं?” सूर्य ने कहा।

"हमें पता है कि यह कार्य इतना आसान नहीं है। ब्रह्मदेव ने कहा- “पर इसका भी उपाय हमारे पास है।... आप में से कोई यह बताये कि हमारे पास ऐसा कौन सा ज्ञान का भंडार है? जो कभी खाली नहीं होगा और वह हमेशा सभी मनुष्यों को उचित मार्ग दिखायेगा।"

“वेदों का ज्ञान।” गणेश ने हाथ उठाते हुए कहा“वही एक ऐसा ज्ञान है, जो कलयुग में भी सभी को उचित मार्ग दिखा सकता है।'

"बिल्कुल सही कहा गणेश ने।” ब्रह्मदेव ने अपने एक हाथ में पकड़े वेद को सभी को दिखाते हुए कहा"वह वेदों का ज्ञान ही होगा, जिसके द्वारा हम उचित मनुष्य का चुनाव कर सकते हैं और वेदों के ज्ञानार्जन के बाद, वह मनुष्य कभी भी, कलयुग में भी, अपने मार्ग से विमुख नहीं होगा।”

“परंतु ब्रह्मदेव, इस वेद को समझना मनुष्य के मस्तिष्क से परे होगा।” कार्तिकेय ने कहा- “यह तो अत्यंत जटिल भाषा में है, इसे तो मैं स्वयं भी अभी समझने की कोशिश कर रहा हूं।"

“भ्राता श्री, ये मैं आपको अच्छे से समझा दूंगा। मुझे यह बहुत अच्छे से आ गया है।" गणेश ने अपनी भोली सी भाषा में कहा।

“मुझे तुमसे ज्ञान लेने की जरुरत नहीं है, मैं इसे स्वयं समझ लूंगा।” कार्तिकेय को गणेश की बात सुनकर बहुत बुरा लगा। वह अपने छोटे भाई से किसी भी प्रकार का ज्ञान नहीं लेना चाहते थे।

ब्रह्मदेव ने कार्तिकेय की बात पर ध्यान नहीं दिया और वह पुनः बोले- “तुम सही कह रहे हो कार्तिकेय, इसकी भाषा अत्यंत जटिल है, परंतु आज से हजारों वर्षों के बाद, जब कलयुग का पृथ्वी पर प्रवेश होने वाला होगा, तो पृथ्वी पर एक ऋषि कृष्ण द्वैपायन का जन्म होगा। वही ऋषि इस 1 वेद को 4 भागों में विभक्त कर, इसे नया आकार देंगे और वेदों के इसी विभाजन के कारण उन्हें महर्षि वेद व्यास के नाम पर जाना जायेगा। वेद व्यास का अभिप्राय ही होगा, वेदों का विभाजन करने वाला। अब रही बात वेदों के इस विभाजन को सरलता देने की, तो मुझे लगता है कि यह कार्य गणेश बहुत आसानी से कर लेंगे। क्यों गणेश हमने उचित कहा ना?"

“जी ब्रह्मदेव, आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन होगा।” गणेश ने सिर झुकाते हुए कहा।

"तो अब बचता है कार्य, मनुष्यों के चयन और उन्हें वेदों का ज्ञान देने का।” ब्रह्मदेव ने पुनः कहना शुरु कर दिया- “तो इसके लिये हम अपने साथ, यहां नीलाभ और माया को लेकर आये हैं। माया निर्माण शक्ति में पूर्ण निपुण है और निर्माण शक्ति के ही माध्यम से, माया पृथ्वी पर अलग-अलग जगहों पर, 15 लोकों का निर्माण करेगी। यह लोक पूर्णतया, एक भव्य नगर की भांति होंगे। इन 15 लोकों में हम 30 अद्भुत शक्तियों को छिपा देंगे और जो मनुष्य वेदों का ज्ञान अर्जित कर, इन 30 शक्तियों को प्राप्त करेगा, उसे ही हम अपनी देवशक्तियां देंगे। अब इसके लिये माया को हिमालय पर, एक विद्यालय 'वेदालय' की रचना भी करनी होगी। जहां पर कुछ चुने हुए मनुष्यों के बालकों को, नीलाभ वेदों के माध्यम से शिक्षा देंगे और उन बालकों को इतना निपुण बनायेंगे कि वह देवशक्ति धारण करने योग्य हो जायें।"

"बालको के हाथ में देवशक्ति देना क्या उचित होगा ब्रह्मदेव?” पवन ने कहा।

"क्यों नहीं पवनदेव।” ब्रह्मदेव ने कहा- “वेदालय की प्रतियोगिताएं इतनी दुष्कर होंगी कि आप भी उन्हें सरलता से पूर्ण नहीं कर पायेंगे और अगर वह बालक उसे पूर्ण कर लेते हैं, तो उन्हें देवशक्ति देने में दुविधा ही क्या है?”

“परंतु ब्रह्मदेव, वह बालक जब तक उन देवशक्तियों का प्रयोग सही से सीखेंगे, तब तक तो वह बूढ़े हो जायेंगे। मनुष्यों की आयु आखिर होती ही कितनी है?" वरुण ने कहा।

"हां, यह बात आपने सही कही वरुणदेव।" ब्रह्मदेव ने कहा- “इसी के लिये विद्यालय की पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात्, हम उन्हें अमृतपान करायेंगे, जिससे वह भी आप लोगों की तरह, अमृत्व को प्राप्त कर लेंगे और युगोंयुगों तक निष्पक्ष भाव से ब्रह्मांड रक्षक का कार्य करते रहेंगे।

यह बात सुन कर इंद्र का हृदय कांप गया। वह सोचने लगे कि कहीं वह मनुष्य आगे चलकर, देवशक्तियों की शक्ति से, उनका ही सिंहासन ना छीन लें? परंतु इंद्र जानते थे कि इस समय त्रिदेवों के सामने कुछ भी बोलना सही नहीं है? अन्यथा वह कहीं अभी ही सिंहासन से ना हटा दिये जायें?

यह सोच इंद्र ने वापस त्रिदेवों की ओर देखना शुरु कर दिया।

पर जैसे ही इंद्र की नजरें भगवान विष्णु से टकराईं, वह एकाएक सटपटा गये, क्योंकि भगवान विष्णु मुस्कुराते हुए उन्हें ही देख रहे थे।

इंद्र को लगा कि जैसे उनकी चोरी पकड़ ली गई हो, इसलिये वह जल्दी से इधर-उधर देखने लगे।

“चलिये अमृतपान भी ठीक है, पर वह विवाह तो करेंगे ना? फिर विवाहोपरांत वह अपने मार्ग से भ्रमित भी हो सकते हैं? उन्हें अपने परिवार की सुरक्षा का भार सर्वोपरि लगने लगेगा। फिर वह ब्रह्मांड रक्षक का भार अपने कंधों पर कैसे उठा पायेंगे?” गुरु बृहस्पति ने कहा।

"नहीं, वह तब तक विवाह नहीं करेंगे, जब तक कि उन्हें स्वयं के समान कोई दूसरा मनुष्य नहीं मिल जाता? जब उन्हें दूसरा मनुष्य मिल जायेगा, तो वह अपनी शक्तियों के साथ, अपना अमरत्व भी दूसरे मनुष्य को दे देंगे और स्वयं विवाह कर, एक साधारण मनुष्य की जिंदगी जी सकेंगे।" ब्रह्मदेव ने कहा।

"क्या हम उन लोकों के नाम जान सकते हैं ब्रह्मदेव?” शेषनाग ने कहा।

“अवश्य।” यह कह ब्रह्मदेव ने उन लोकों के नाम बताना शुरु कर दिया- “देवलोक, शक्तिलोक, राक्षसलोक, ब्रह्मलोक, नागलोक, मायालोक, हिमलोक, नक्षत्रलोक, पाताललोक, भूलोक, सिंहलोक, रुद्रलोक, यक्षलोक, प्रेतलोक और मत्स्यलोक।"

शेषनाग, नागलोक का नाम सुनकर ही प्रसन्न हो गये।

“राक्षसलोक?" इंद्र यह सुनकर डर गये- “इन नामों में तो राक्षसलोक भी है। तो क्या राक्षसों के पास अद्भुत शक्तियां रखी जायेंगी? अगर उन राक्षसों ने उन शक्तियों को हमारे विरुद्ध ही प्रयोग करना शुरु कर दिया तो?"

“आप व्यर्थ ही चिंता कर रहें हैं देवराज।” महादेव ने कहा- “आपने अभी कुछ दिन पहले ही महादानव वृत्रा का वद्ध किया था, आपको तो पता ही है कि कोई भी राक्षस अभी आपसे

बहुत दिनों तक युद्ध करने नहीं आयेगा। वैसे भी अब आपके पास वृत्रा की मायावी तलवार और ढाल तो है ही। फिर आप अकारण ही चितिंत हो रहे हैं?"

महादेव की बात सुन इंद्र शांत होकर बैठ गये। अब वह महादेव को कैसे बताते? कि वृत्रा की तलवार और ढाल तो कब की, उनके पास से गायब हो गई है। वह तो स्वयं उसे ढूंढने में लगे हैं।

“मुझे, बस एक चीज की और चिंता है महादेव। इंद्र ने पुनः बोलते हुए कहा- “माया तो स्वयं दैत्यराज मयासुर की पुत्री हैं, ऐसे में उनके सुपुर्द सभी देवशक्तियों को करना क्या उचित निर्णय होगा?"

यह कहकर इंद्र ने अपना दाँव खेलने की कोशिश की।

यह सुनकर महादेव मुस्कुराते हुए बोले- “क्या आपको पता भी है इंद्रदेव? कि माया वास्तव में कौन है? ... कोई बात नहीं? यह तो एक ऐसा रहस्य है, जिसका रहस्योद्घाटन अभी करने का उचित समय नहीं है। समय आने पर आप स्वयं इस रहस्य को जान जायेंगे। लेकिन तब तक आपकी दुविधा के लिये, मैं आपको वचन देता हूं कि माया से इस प्रकार की कोई गलती नहीं होगी।"

महादेव के शब्द सुन इंद्र के चेहरे पर गहरी सोच के भाव उभर आये।

अब इंद्र के दिमाग में शक का कीड़ा घुस चुका था और वह यह सभा समाप्त होते ही, माया के बारे में पता लगाने के लिये पूर्ण तत्पर हो चुके थे।

“किसी को और कुछ पूछना है? या फिर अब हम शक्तियों की बात करें।” ब्रह्मदेव ने सभी देवताओं की ओर देखते हुए पूछा।

पर इस बार किसी और ने कुछ ना पूछा। अब भला त्रिदेवों की योजना पर प्रश्नचिंह कोई कैसे उठा सकता था?

"तो फिर ठीक है, अब हम देखते हैं कि प्रत्येक देवता अपनी कौन सी देवशक्ति माया और नीलाभ को देना चाहते हैं?" ब्रह्मदेव ने कहा- “सबसे पहले मैं सूर्यदेव से आग्रह करूंगा कि वह अपनी कोई देवशक्ति माया और नीलाभ को प्रदान करें।'

ब्रह्मदेव के वचनों को सुनकर सूर्यदेव अपने स्थान से खड़े हो गये और उन्होंने अपनी आँख बंदकर किसी मंत्र का आहवान किया।

इसी के साथ एक सुनहरे रंग का रत्न सूर्यदेव के हाथ में चमकने लगा।

“यह सूर्यशक्ति है माया।” सूर्यदेव ने सूर्यशक्ति को माया को देते हुए कहा- “यह जिसके पास रहेगी, उसे सूर्य का तेज और उसकी ज्वाला प्रदान करेगी। सूर्य का तेज उस व्यक्ति के भाव

को पराक्रम से भर देगा और सदैव उसकी सुरक्षा के लिये तत्पर रहेगा"

यह कहकर सूर्यदेव ने, सूर्यशक्ति माया को प्रदान कर दिया।

माया ने सूर्यशक्ति को लेकर उसे अपने मस्तक से लगाया और उसे अपने हाथ में पकड़े, एक सुनहरे रंग के धातु के डिब्बे में रख लिया।

सूर्यशक्ति मिलने के बाद अब ब्रह्मदेव ने अग्निदेव की ओर इशारा किया।

ब्रह्मदेव का इशारा पाकर अग्निदेव अपने स्थान से खड़े हो गए।

उन्होंने भी आँख बंदकर कोई मंत्र पढ़ा, उनके हाथ में अब बैंगनी रंग का एक चमकता हुआ रत्न प्रकट हुआ।

“ये अग्नि शक्ति है माया, यह शक्ति जो भी मनुष्य धारण करेगा, उसके पास अग्नि की समस्त शक्तियां आ जायेंगीं और अग्नि की शक्ति, उस मनुष्य को धैर्यता और दिव्यता प्रदान करेगी।"

यह कहकर अग्निदेव ने भी अपनी अग्निशक्ति को माया के सुपुर्द कर दिया। माया ने अग्निशक्ति को भी अपने मस्तक से लगाकर उसी सुनहरे डिब्बे में रख लिया।

इस बार ब्रह्मदेव को इशारा करने की कोई जरुरत नहीं पड़ी, वरुणदेव स्वयं ही अपने स्थान से खड़े हो गये।

वरुणदेव ने नीले रंग के रत्न को माया को देते हुए कहा- “यह जलशक्ति है माया, यह जिसके पास रहेगी, उसे जल की समस्त शक्तियां प्राप्त होंगी और यह जलशक्ति उस मनुष्य को गंभीरता प्रदान करते हुए, उसे सभी समावेशों में रहने की अद्भुत शक्ति देगी।"

इसके पश्चात् पवनदेव ने माया को गाढ़े नीले रंग का रत्न प्रदान करते हुए कहा- “यह वायुशक्ति है माया, यह जिसके पास रहेगी, उसे वायु की सभी शक्तियां प्राप्त हो जायेंगी और यह वायु शक्ति उस मनुष्य को चंचल बनाते हुए, उसे विज्ञान की अद्भुत समझ प्रदान करेगी।"

अब बारी हनुमान की थी। सभी को अपनी तरफ देखते पाकर हनुमान अपने स्थान से खड़े हुए और बोले“मेरे पास स्वयं की ऐसी कोई विशेष शक्ति नहीं है, मैं तो सदैव से ही, धरती पर रहकर ईश्वर की आराधना करता आया हूं। परंतु इस विशेष पर्व पर, मैं भूदेवी की दी हुई धराशक्ति को प्रदान करना चाहूंगा, जिसकी शक्ति से मैं पृथ्वी पर रहते हुए, स्वयं ऊर्जा ग्रहण करता हूं। यह धराशक्ति जिसके पास रहेगी, उसे धरा के कणों को नियंत्रित करने का अधिकार होगा। यह धराशक्ति उस मनुष्य को चट्टान सा कठोर बनायेगी, जिससे उसका अपनी प्रत्येक भावना पर नियंत्रण होगा।

यह कहकर हनुमान ने एक हरे रंग का रत्न माया को प्रदान कर दिया।

इसके बाद शनिदेव ने खड़े होकर माया को एक नीले रंग का रत्न देते हुए कहा- “यह मानस शक्ति है माता, यह जिसके पास रहेगी, उसके पास विचित्र मानस शक्तियां आ जायेंगी। वह इन मानस शक्तियों से अपने हाथों से मानस तरंगें छोड़कर, उसे किसी भी वस्तु में परिवर्तित कर सकेगा। यह मानस शक्तियां सदैव मस्तिष्क को दृढ़ बनाती हैं।

माया ने शनिदेव की मानस शक्ति को भी उसी सुनहरे डिब्बे में डाल दिया।

फिर शेषनाग ने उठकर माया को नागशक्ति प्रदान की। वह नागशक्ति एक काले रंग के रत्न के अंदर थी।

"यह नागशक्ति है माया।” शेषनाग ने कहा- "इस शक्ति में सभी नागों, सर्पो को नियंत्रित करने की शक्ति है। इसको धारण करने वाले मनुष्य पर, किसी भी प्रकार का विष का प्रभाव नहीं होगा और सभी नाग जाति इस नाग शक्ति के प्रभाव से, धारक का कहना मानेंगे। साथ ही साथ यह नागशक्ति धारक को, जल में साँस लेने के योग्य भी बना देगी।"

शेषनाग के पश्चात कार्तिकेय खड़े हो गये- “मैं माता माया को हिमशक्ति प्रदान करता हूं, यह हिमशक्ति, धारण करने वाले मनुष्य को, हिम की शक्तियों से सुशोभित करेगी और उसमें हिम के समान स्थायित्व और सुंदरता सदा ही शोभायमान रहेगी।"

यह कहकर कार्तिकेय ने एक सफेद रंग का रत्न माया के हाथों पर रख दिया।

माया ने आशीष के तौर पर अपना हाथ कार्तिकेय के सिर पर रख दिया।

अब बारी थी यम की। यम ने गाढ़े लाल रंग का रत्न माया को देते हुए कहा- “यह जीव शक्ति है माता, यह जीव शक्ति जिसके पास रहेगी, वह सभी जीवों की बात को भलि-भांति समझ सकेगा और किसी भी जीव का आकार ग्रहण कर सकेगा।"

इसके बाद गुरु बृहस्पति का नंबर था। गुरु बृहस्पति ने माया को हल्के हरे रंग का रत्न देते हुए कहा- “यह वृक्षशक्ति है पुत्री, इसको धारण करने वाले के पास, सभी वृक्षों की भावनाओं को समझने की अद्भुत शक्ति आ जायेगी। वह इस शक्ति के माध्यम से वृक्षों से बात भी कर सकेगा और उनके खुशी व दर्द को महसूस भी कर सकेगा। ”

माया ने श्रद्धास्वरुप यह भेंट भी स्वीकार कर ली।

गुरु बृहस्पति माया को वह रत्न देकर वापस अपने स्थान पर बैठ गये।

अब गणेश अपने स्थान से उठे और अपनी आँखें मटकाते हुए माया के पास आ गये। गणेश को देखते ही माया के चेहरे पर स्वतः ही मुस्कान आ गयी।

"हमें आपसे रत्न की जगह आपका मूषक चाहिये। कहां है वह? कहीं दिखाई नहीं दे रहा?" माया ने हास्य भरे शब्दों में गणेश का कान पकड़ते हुए कहा।

“मूषक को डर था, कि आप उन्हें मांग सकती हो, इसलिये वह डर के कारण आये ही नहीं।" गणेश ने अपना कान छुड़ाते हुए कहा- “और माता, आप ये हर समय मेरे कान खींचकर और लंबा क्यों करना चाहती हैं?”

"जिससे आपके कान और बड़े हो जायें, फिर आप बड़े कान की सहायता से आसमान में उड़ भी सको। ऐसी स्थिति में आपको आपके मूषक की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी।" माया ने मुस्कुराते हुए कहा।

सभी देवतागण माया और गणेश के इस परिहास को देख पूर्ण आनन्दित हो रहे थे।

“मैं अपने कान से उड़ सकूँगा। अरे वाह कितना अच्छा लगेगा आसमान में उड़कर।" गणेश ने भी खुशी भरे स्वर में कहा- “ठीक है माता, जब ये सभा पूर्ण हो जायेगी, तो मैं रोज आपके पास, अपने कान खिंचवाने आया करूंगा।

माया ने भी गणेश की भोली बातें सुन अपना सिर हिला दिया।

अब गणेश ने भी अपनी आँखें बंदकर, माता पार्वती का ध्यान किया। अब उनके हाथ में एक लाल रंग का रत्न चमकने लगा, जिससे तीव्र प्रकाश उत्पन्न हो रहा था।

“माता, यह प्रकाश शक्ति है, इसे धारण करने वाले मनुष्य के पास, ब्रह्मांड के हर प्रकार के प्रकाश को उत्सर्जित एवं परावर्तित करने की क्षमता आ जायेगी। इसे धारण करने वाले मनुष्य के मस्तिष्क में, असीम ज्ञान का संचार होगा और इस ज्ञान से वह पृथ्वी की दशा और दिशा दोनों ही परिवर्तित कर सकेगा। यह शांति का भंडार भी है और रचनाओं का संसार भी। "

यह कहकर गणेश ने उस रत्न को माया के सुपुर्द कर दिया।

सभी देवताओं के बाद इंद्र अपने सिंहासन से खड़े हो गये। इंद्र ने भी मंत्र पढ़कर, हवा से एक हल्के बैंगनी रंग के रत्न को उत्पन्न किया और उसे माया को देते हुए बोला- “देवी माया, यह वशीन्द्रिय शक्ति है, इसे धारण करने वाले मनुष्य का, अपनी सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण हो जायेगा। वह एक साधारण मनुष्य से बढ़कर, देवताओं की तरह व्यवहार करने लगेगा। एक बार इसका वरण करने के बाद, इसके प्रभाव को कम तो किया जा सकता है, परंतु पूर्णतया समाप्त नहीं किया जा सकता। यह अपने धारक में मेरी ही भांति देवगुण उत्पन्न कर देगा। "

अब देवसभा में बैठे सभी देवगणों ने अपनी कोई ना कोई शक्ति माया को दे दी थी।

माया ने अपने हाथ में पकड़े सुनहरे डिब्बे को देखा, जिसमें अब 12 अलग-अलग रंगों के रत्न चमक रहे थे।

“अब हमारी बारी है। "ब्रह्मदेव ने कहा और अपनी आँख बंदकर उन्होंने भी एक शक्ति का आहवान किया। कुछ ही देर में ब्रह्मदेव के हाथ में भी, एक पीले रंग का रत्न दिखाई देने लगा।

“यह ब्रह्मशक्ति है पुत्री, यह जिसके पास भी रहेगा, उसके पास तुम्हारे समान, शक्तिशाली निर्माण शक्ति आ जायेगी। उस निर्माण शक्ति से वह कल्पना के माध्यम से, किसी भी चीज का निर्माण कर सकेगा। ब्रह्मशक्ति जिसके पास भी रहेगी, वह ब्रह्मांड के हर रहस्य को समझने में सक्षम होगा। उसके निर्माण के समान पृथ्वी पर कोई भी निर्माणकर्ता नहीं होगा।"

यह कहकर ब्रह्मदेव ने ब्रह्मशक्ति को भी माया के सुपुर्द कर दिया।

अब भगवान विष्णु आगे आये। उन्होंने अपने हाथ में पकड़े पांचजन्य शंख से एक नारंगी रंग के रत्न को निकालकर माया को देते हुए कहा- “यह ध्वनि शक्ति है माया, यह जिसके पास भी रहेगी, उसके पास हर प्रकार की ध्वनि को उत्पन्न करने और उसे नियंत्रित करने की शक्ति होगी। वह किसी भी पुरानी ध्वनि को भी सुनने में सक्षम होगा और वह सदैव ईश्वरीय शक्ति के सानिध्य में रहेगा।"

अब सभी की निगाह महादेव की ओर थी। महादेव ने माया को एक छोटी सी डिबिया पकड़ाते हुए कहा“इस डिबिया में देवी गंगा की पहली बूंद है माया, जिसे मैंने गुरुत्व शक्ति से बांध रखा है, यह बूंद जिसके भी सिर पर गिरेगी, उसे वह गुरुत्व शक्ति प्राप्त हो जायेगी। जिस मनुष्य के पास ये गुरुत्व शक्ति रहेगी, वह ब्रह्मांड के किसी भी ग्रह पर गुरुत्वाकर्षण को नियंत्रित कर सकता है। उस मनुष्य में उड़ने की शक्ति स्वतः आ जायेगी और वह बहुत सी शक्तियों को अपने शरीर पर रोकने में सक्षम हो जायेगा।

माया ने गुरुत्व शक्ति की डिबिया को भी अपने सुनहरे डिब्बे में रख लिया।

अब माया के पास कुल 15 शक्तियां एकत्रित हो गईं थीं।

“माया और नीलाभ, अब इन शक्तियों को उचित पात्र तक पहुंचाने की जिम्मेदारी तुम दोनों के कंधों पर है।” महादेव ने कहा- “अब तुम दोनों मिलकर 15 लोकों का निर्माण करो, जब निर्माण कार्य पूर्ण हो जायेगा, तो हम तुम दोनों को बता देंगे कि कौन सी 30 अद्भुत शक्तियां, उन 15 लोकों में छिपाना है। ... हमें पूर्ण विश्वास है कि तुम दोनों अपेक्षाओं पर खरा उतरोगे।"

यह कहकर महादेव ने अपने हाथ को हवा में उठाया, जो कि इस बात का प्रमाण था कि यह सभा अब समाप्त हो चुकी है।

सभी देवता अब अपने स्थान से खड़े हो गये।

कुछ ही देर में त्रिदेव, माया और नीलाभ के संग वहां से चले गये।

अब सभी देवता भी एक-एक कर सभा से जाने लगे।

इंद्र ने हाथ जोड़कर सभी को विदाई दी, पर इस समय इंद्र का मस्तिष्क बहुत तेजी से चलायमान था, वह कुछ ना कुछ तो ऐसा सोच रहे थे, जो आगे जाकर एक बड़ी समस्या खड़ी करने वाला था।

ooooo

नटखट हनुका

20,005 वर्ष पहले …….

नीलमहल, मायालोक, हिमालय

देवताओं से दिव्यशक्तियां प्राप्त करने के बाद माया ने 15 लोकों का निर्माण कार्य शुरु कर दिया था।

सबसे पहले माया ने मायालोक की स्थापना की। इस मायालोक को उसने, अपने और नीलाभ के निवास स्थान के रुप में चुना।

इस मायालोक में माया ने एक बहुत ही सुंदर नीलमहल की रचना की, जिसमें कि नीले रंग को सर्वोत्तम स्थान दिया गया था।

नीलमहल पूर्णरुप से सोने का बना था, जिसमें जगह-जगह पर नीलम रत्न जड़े हुए थे। महल के सभी पर्दे भी नीले रंग के ही थे।

माया ने यह महल नीलाभ को समर्पित किया था।

हनुका अब 6 वर्ष का हो गया था।

आज प्रातःकाल का समय था। माया ने सुबह उठकर, बगल में सो रहे नन्हें हनुका को देखा और फिर स्नान करने चली गईं।

माया के जाते ही हनुका ने अपनी आँखें खोल दीं।

आँखें खुलते ही प्रतिदिन की भांति, मस्तिष्क में शैतानियां कुलबुलाने लगीं।

अब वह उठकर बिस्तर से नीचे आ गया। हनुका की नजर अब सो रहे नीलाभ पर थी।

शांत भाव से सो रहे नीलाभ को देख हनुका से रहा ना गया, अब उसकी नजरें कमरे में चारो ओर घूमने लगीं।

तभी हनुका की नजर माया द्वारा बनाई गई, एक चित्रकारी की ओर गया, जिसमें माया ने कूची से प्रकृति के रंगों को दर्शाया था।

हनुका दबे पांव उस चित्र के पास गया और उसके बगल रखे, विभिन्न प्रकार के रंगों से भरी थाली को उठा लिया।

अब हनुका धीरे-धीरे नीलाभ के पास पहुंचा और अपने नन्हें हाथों से नीलाभ के चेहरे पर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगा।

नीलाभ इस समय गहरी निद्रा में था, उसे पता भी ना चला, कि कब उसका चेहरा एक कला प्रदर्शनी की भांति, विविध रंगों से सज चुका है।

कुछ ही देर में हनुका अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हो गया। तभी हनुका को स्नान घर का द्वार खुलने का अहसास हुआ।

हनुका इस आवाज को सुन तेजी से, पलंग के नीचे छिप गया।

माया स्नान करके निकली और पूजा घर की ओर चल दी, तभी उसका ध्यान नीलाभ के चेहरे की ओर गया।

नीलाभ का चेहरा देख, माया का हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया।

माया की तेज हंसी को सुन, नीलाभ भी नींद से जाग गया।

“क्या हुआ माया? आपको सुबह-सुबह इतनी हंसी क्यों आ रही है? आज कुछ विशेष है क्या?” नीलाभ ने पूछा।

"हां नीलाभ, आज बहुत विशेष दिन है। अगर तुम दर्पण देखोगे, तो तुम्हें भी आज की विशेषता का आभास हो जायेगा।" माया ने हंसते हुए कहा।

माया की बात सुन, नीलाभ उछलकर पलंग से खड़ा हो गया और दर्पण की ओर लपका।

पर दर्पण में चेहरा देखते ही नीलाभ की भी हंसी छूट गई। हनुका की नन्हीं कूची ने, अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए, नीलाभ के चेहरे को किसी राक्षस से पूरा मिलाने की कोशिश की थी।

“कहां गया वो हनुका? आज तो वो मेरे हाथों से मार खाएगा।” नीलाभ ने झूठा गुस्सा दिखाते हुए कहा“ अच्छे भले चेहरे को राक्षस बना दिया।"

"हनुका, इतनी अच्छी चित्रकारी कर बाहर की ओर भाग गया है।" माया ने कहा- “आप स्नान घर में जाकर अपना चेहरा साफ कर लीजिये, तब तक मैं उसे ढूंढकर लाती हूं।

माया के शब्द सुनकर नीलाभ मुस्कुराया और स्नान घर की ओर चल दिया।

नीलाभ के जाते ही माया ने पलंग के नीचे झांककर, हनुका को देखते हुए कहा- “अब पलंग के नीचे से बाहर आ जाओ हनुका, तुम्हारे पिताजी स्नान घर में चले गये हैं।”

“आप जानती थीं कि मैं पलंग के नीचे छिपा हूं?" हनुका ने पलंग के नीचे से निकलते हुए कहा।

“प्रत्येक माँ को अपने पुत्र के बारे में सब कुछ पता रहता है। वो तो मैंने आपके पिताजी को इसलिये नहीं बताया, कि कहीं सुबह-सुबह मेरे पुत्र को मार ना पड़ जाये?” माया ने हनुका को अपनी ओर खींचते हुए कहा“वैसे तुम्हारी चित्रकारी मुझे बहुत पसंद आयी हनुका। ।”

“अच्छा! फिर कल मैं आपके चेहरे पर भी ऐसी ही चित्रकारी कर दूंगा।” हनुका ने भोलेपन से कहा।

“अरे नहीं-नहीं! मुझे क्षमा करो पुत्र, तुम अपने पिताजी पर ही चित्रकारी करते रहो। मुझे अपने चेहरे पर चित्रकारी नहीं करवानी।" माया ने डरने का अभिनय करते हुए कहा।

“ठीक है माता, मैं आप पर चित्रकारी नहीं करूंगा, पर मुझे आपसे एक चीज पूछनी है माता?” हनुका ने माया को देखते हुए कहा- “आपके और पिताजी के शरीर पर तो ऐसे बाल नहीं हैं, फिर मेरे शरीर पर ऐसे बाल क्यों हैं? मैं आप दोनों की तरह क्यों नहीं दिखता माता?"

हनुका अपने शरीर के बालों को दिखाते हुए बोला।

“तुम्हारे शरीर पर इसलिये इतने बाल हैं, कि तुम्हें हिमालय की बर्फ में ठंडक ना महसूस हो। महादेव बालकों को ठंड से बचाने के लिये, उनके शरीर पर ऐसे बाल दे देते हैं।” माया ने नन्हें हनुका को समझाते हुए कहा।

"फिर महल के बाकी दास-दासियों के, पुत्रों के शरीर पर बाल क्यों नहीं हैं माता?” हनुका ने एक और प्रश्न कर दिया।

'क्योंकि महादेव, केवल युवराज के शरीर पर इतने बाल देते हैं और तुम तो हिमालय के युवराज हो ना? बस इसीलिये तुम्हारे शरीर पर इस प्रकार से बाल हैं।” माया ने कहा- “क्या तुम्हें ये बाल नहीं पसंद हैं हनुका?"

“नहीं माता, मुझे भी अन्य बालकों की तरह दिखना है।” हनुका ने अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहा- “क्या मैं उनकी तरह नहीं बन सकता माता?"

“बन सकते हो, पर इसके लिये तुम्हें देवशक्तियों की आवश्यकता होगी।” माया ने हनुका को समझाते हुए कहा- “पर मुझे नहीं लगता कि तुम अन्य बालकों के समान बनकर प्रसन्न रह पाओगे?"

“आपको ऐसा क्यों लगता है माता?” हनुका के मस्तिष्क में घुमड़-घुमड़ कर नये प्रश्न आ रहे थे।

“क्योंकि हनुका, हम जैसे हैं हमें वैसी ही प्रवृति के लोग अच्छे लगते है। हो सकता है कि क्षणिक मात्र, हमारा हृदय किसी अन्य प्रवृति की कामना करे, पर कुछ देर के बाद ही, हम स्वयं पहले की ही तरह बनना चाहते हैं।" माया ने कहा।

“मैं आपके कहने का अभिप्राय नहीं समझा माता?" हनुका के चेहरे पर उलझन के भाव नजर आये।

“ठीक है, मैं तुम्हें सरल भाषा में समझाने के लिये एक छोटी सी कथा सुनाती हूं।” माया ने पलंग पर बैठते हुए हनुका को अपनी गोद में बैठा लिया।

"अरे वाह! कथा फिर तो बहुत मजा आयेगा। नन्हा हनुका खुश होते हुए बोला।

"तो सुनो, एक बार हिमालय की कंदराओं में एक ऋषि रहते थे, जो प्रतिदिन प्रातःकाल, गंगा नदी के पानी में स्नान करते थे और सूर्यदेव को जल चढ़ाते थे। प्रतिदिन की भांति एक दिन जब, वह नदी में स्नान कर, सूर्य को जल चढ़ाने के लिये अपनी अंजुली में पानी भर रहे थे, तभी उनकी अंजुली में एक नन्हीं सी चुहिया आ गई, जो कि शायद नदी की धारा में डूब रही थी। ऋषि ने उस चुहिया को कन्या बनाकर अपनी पुत्री के रुप में स्वीकार कर लिया। पुत्री जब बड़ी हुई तो ऋषि ने अपनी पुत्री से पूछा कि तुम्हें किस प्रकार का वर चाहिये? तो पुत्री ने कहा कि जो इस पूरे संसार में सर्वशक्तिमान हो, मुझे उससे विवाह करना है। ऋषि ने बहुत सोचने के बाद पुत्री को सूर्यदेव का प्रस्ताव दिया। ऋषि ने कहा कि सूर्यदेव ही इस पृथ्वी पर सर्वशक्तिमान हैं। पर ऋषिपुत्री ने कहा कि सूर्यदेव से शक्तिशाली तो मेघ हैं, जो कि उन्हें पल भर में पूर्णतया ढक लेते हैं। तो ऋषि ने मेघों के देवता का प्रस्ताव अपनी पुत्री के सामने रखा, पर पुत्री ने उसे भी अस्वीकार कर दिया। पुत्री ने कहा कि मेघों के देवता से शक्तिशाली, तो पर्वतराज हिमालय हैं, जो मेघों को भी रोककर, उन्हें बरसने पर विवश कर देते हैं। यह सुनकर ऋषि ने इस बार हिमालय के विवाह का प्रस्ताव अपनी पुत्री के सामने रखा। तभी उस पुत्रि को हिमालय में छेद करता हुआ एक चूहा दिखाई दिया। उसे देख पुत्री ने कहा कि हिमालय से शक्तिशाली तो यह चूहा है, जो हिमालय में भी छेद कर सकता है, मैं तो इस चूहे से ही शादी करूंगी। फिर ऋषि समझ गये कि इस चुहिया को पूरी पृथ्वी पर, चूहा ही सबसे शक्तिशाली दिखाई दिया, इसलिये ऋषि ने उस कन्या को फिर से चुहिया बना दिया और उसका विवाह खुशी-खुशी उस चूहे से कर दिया।

तो इस कथा से यह पता चलता है हनुका कि जो जिस प्रकार है, उसे सदैव वैसी ही चीजें भाती हैं।'

यह कहकर माया शांत हो गई और हनुका की ओर देखने लगी।

हनुका माया की कथा सुनकर कुछ सोच में पड़ गया।

उसे सोचता देख माया ने पूछ लिया- “क्या सोच रहे हो हनुका?”

"तो फिर मेरा भी विवाह किसी बालों वाली कन्या के साथ ही होगा?" हनुका ने अपने चेहरा रोने सा बनाते हुए पूछा।

हनुका की बात सुन माया जोर से हंसते हुए बोली“अरे नहीं हनुका, तुम्हारा विवाह तो मैं पृथ्वी की सबसे सुंदर कन्या से करुंगी और तब तक तो तुम देवशक्ति प्राप्त कर, अपने भी शरीर के बाल हटा चुके होगे?"

“फिर ठीक है।" माया की बात सुन अब हनुका खुश हो गया।

“अच्छा, अब मैं महादेव की पूजा करने जा रही हूं। पर इस बीच, तुम कोई और शरारत मत करना। ठीक है?” माया ने हनुका को पलंग पर बैठाते हुए कहा।

“जी माता, मैं आपके पूजा करने तक, चुपचाप पलंग पर बैठा रहूंगा, मैं कोई शरारत नहीं करूंगा। हनुका ने भोलेपन से कहा।

हनुका के वचन सुन माया ने हनुका के सिर पर धीरे से हाथ फेरा और पूजा स्थल की ओर बढ़ गई।

माया तो चली गई, पर हनुका अभी भी पलंग पर बैठा देवशक्ति के बारे में सोच रहा था- “माता ने कहा कि अगर मुझे देवशक्ति मिल जाये तो मैं भी दूसरे मनुष्यों की ही भांति, सुंदर दिखने लगूंगा, पर दूसरे कमरे में एक डिब्बे में बहुत सी देवशक्तियां रखी हैं, फिर माता, मुझे उन देवशक्तियों से सुंदर क्यों नहीं बना देती? शायद माता उन देवशक्तियों के बारे में भूल गई होंगी? एक काम करता हूं, मैं स्वयं उन देवशक्तियों से सुंदर बन जाता हूं और माता जब पूजा करके आयेगी, तो मैं उसे अपना सुंदर चेहरा दिखाकर, आश्चर्यचकित कर दूंगा हां-हां यही सही रहेगा।

यह सोच नन्हा हनुका दूसरे कक्ष की ओर चल दिया, जहां देवशक्तियां रखीं थीं।

हनुका ने दूसरे कमरे में रखी अलमारी खोल ली, नीचे के दोनों खानों में वह सुनहरा डिब्बा नहीं था।

अतः हनुका एक कुर्सी को खींचकर, अलमारी के पास ले आया और उस पर चढ़कर देखने लगा।

अब हनुका को अलमारी के तीसरे खाने में रखा, वह सुनहरा डिब्बा दिखाई दे गया। हनुका ने दोनों हाथ लगाकर उस सुनहरे डिब्बे को उठा लिया।

अब वह कुर्सी से उतरकर, वहीं कक्ष में जमीन पर ही बैठ गया।

हनुका ने अब डिब्बे को खोल लिया। रंग-बिरंगे रत्नों से हनुका की आँखें चमक उठीं।

हनुका अब एक-एक रत्न को उठाकर देखने लगा, पर उसे समझ ना आया कि इन देवशक्तियों का प्रयोग करना कैसे है?

तभी हनुका को उस सुनहरे डिब्बे में एक छोटी सी डिबिया दिखाई दी। यह वहीं डिबिया थी, जिसे माया को महादेव ने दिया था।

हनुका को इन सभी रत्नों के बीच, वह छोटी सी डिबिया का रखा होना, बहुत अजीब सा लगा, इसलिये हनुका ने उस डिबिया को खोल लिया।

“ये क्या बात हुई? इस डिबिया में तो जल की मात्र एक बूंद है?” हनुका ने सोचा- “कुछ सोच हनुका ने उस डिबिया को मुंह लगाकर, जल की उस बूंद को पी लिया।

“इससे तो प्यास भी नहीं बुझी। पता नहीं यह कैसी देवशक्ति थी?” हनुका ने कहा।

तभी हनुका को कक्ष में किसी के आने की आहट सुनाई दी। वह आहट सुन हनुका डर कर तेजी से अलमारी के पीछे छिप गया।

सभी देवशक्तियां कमरे में वैसे ही बिखरी हुईं थीं।

आने वाली आहट माया की थी, जो कि पूजा करके हनुका को ढूंढते हुए उधर ही आ गई थी- “हनुका!"

हनुका को पुकारते हुए, माया कक्ष में प्रविष्ठ हो गई, पर कक्ष में प्रविष्ठ होते ही माया के चेहरे पर हैरानी और क्रोध के भाव एक साथ आ गये।

“हे मेरे ईश्वर, यह हनुका भी ना, पता नहीं क्या-क्या करता रहता है?"

माया ने घबराकर सभी देवशक्तियों को जमीन से उठाकर, वापस डिब्बे में रखना शुरु कर दिया। साथ ही साथ वह उन देवशक्तियों की गिनती भी करती जा रही थी।

14 देवशक्तियों की गिनती कर उन्हें डिब्बे में रखने के बाद, माया की नजर अब दूर पड़ी सुनहरी डिबिया पर गई।

माया ने उस डिबिया को खोलकर देखा, पर उसमें गंगा की पहली बूंद नहीं थी।

यह देखकर माया का कंठ सूख गया, पर इससे पहले कि वह हनुका को ढूंढकर, उसे कोई दण्ड दे पाती, माया की आँखों के सामने ही, हवा में एक बूंद प्रकट होकर, उस डिबिया के अंदर चली गई।

माया यह चमत्कार देख आश्चर्य में पड़ गई, तभी माया को अपने सामने महादेव का ऊर्जा रुप दिखाई दिया।

यह देख माया ने हाथ जोड़कर महादेव को प्रणाम किया।

तभी वातावरण में महादेव की आवाज गूंजी“माया, तुम्हें देवशक्तियों को और ध्यान से रखना होगा, यह तुम्हारा कर्तव्य है, कि तुम इन देवशक्तियों को सदैव उचित व्यक्ति को ही दो। आज अंजाने में ही सही परंतु गुरुत्व शक्ति का प्रयोग हुआ है। परंतु तुम्हारे सद्भाग्य के कारण, वह गुरुत्व शक्ति सही पात्र के पास पहुंच गई है और यही कारण है कि तुम इस डिबिया की गुरुत्व शक्ति को दोबारा से देख पा रही हो। ध्यान रखना जब भी इस गुरुत्व शक्ति का वरण कोई सुपात्र करेगा, तो इसकी दूसरी बूंद इस डिबिया में आ जायेगी, परंतु यदि कभी इस बूंद का वरण किसी कुपात्र ने किया, तो यह बूंद कभी धरती पर प्रकट नहीं होगी और ऐसी स्थिति में, तुम्हें देवताओं के क्रोध का भी सामना करना पड़ सकता है। इसलिये तुम्हें इन देवशक्तियों को लेकर अत्यंत सावधान रहने की जरुरत है।"

“जी महादेव, मैं आगे से सदैव आपकी बात का ध्यान रखूगी। मैं आज ही हिमालय पर आपके एक शिव मंदिर का निर्माण कर, इस गुरुत्व शक्ति को उसमें रख दूंगी।" माया ने कहा- “वह शिव मंदिर इस गुरुत्व शक्ति को लेकर हिमालय के गर्भ में प्रवेश कर जायेगा और जब तक मुझे इस गुरुत्व शक्ति के लिये, कोई सुपात्र नहीं मिल जाता? तब तक मैं इसे वहीं रहने दूंगी। हां वह शिव मंदिर प्रत्येक वर्ष, आपकी पूजा-अर्चना के लिये हिमालय के गर्भ से एक बार बाहर आयेगा और संध्या वंदना के साथ, वापस हिमालय की गर्भ में समा जायेगा। अब रही बात इन बाकी की देवशक्तियों की, तो इन्हें मैं ऐसे स्थान पर रखूगी, कि वहां तक कोई कुपात्र पहुंच कर, इन शक्तियों को प्राप्त ही नहीं कर पायेगा। आज की घटना ने मुझे अच्छा ज्ञान दिया है महादेव, अब मुझसे कभी भी इस प्रकार की त्रुटि नहीं होगी, ऐसा मैं आपको विश्वास दिलाती हूं।"

"कल्याण हो माया।" यह कहकर महादेव अंतर्ध्यान हो गये।

अब माया ने जल्दी से गुरुत्व शक्ति की डिबिया को भी, अपने सुनहरे डिब्बे में रखा और पूरे डिब्बे को अपने हाथ में लेकर कोई मंत्र पढ़ने लगी।

कुछ ही देर में वह सुनहरा डिब्बा माया के हाथों से कहीं हवा में विलीन हो गया।

अब माया की नजर हनुका को ढूंढने में लग गई।

"हनुकाऽऽऽऽऽ।” माया ने कमरे के एक-एक स्थान का सामान हटाकर, हनुका को ढूंढना शुरु कर दिया।

माया ने अलमारी के पीछे भी देखा, पर हनुका पूरे कमरे में कहीं दिखाई नहीं दिया।

तभी माया को हनुका की हंसी सुनाई दी।

माया ने हंसी की आवाज का पीछा करते हुए, कक्ष की छत की ओर देखा, तो माया के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि हनुका इस समय पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण छोड़, कक्ष के छत की ओर, हवा में तैर रहा था।

एक पल में माया को समझ में आ गया कि महादेव किस सुपात्र की बात कर रहे थे। वह जान गई थी कि हनुका ने ही गुरुत्व शक्ति का वरण किया था।

माया ने हनुका को नीचे आने का इशारा किया, पर हनुका ने डरकर अपना सिर ना में हिलाया।

“आप मुझे मारोगी?” हनुका ने भोलेपन से कहा।

“नहीं मारुंगी, परंतु नीचे आओ।” माया ने हनुका को घूरते हुए कहा।

हनुका डरते-डरते नीचे आ गया। ।

माया ने हनुका के कान पकड़े और उसे लेकर महल के अंदर की ओर चल दी- “चलो तुम्हें अपने हाथ के बने लड्डू खिलाती हूं।

“लड्डू! वाह, फिर तो आनन्द ही आ जायेगा। हनुका यह सुनकर खुश हो गया।

माया ने हनुका का हाथ पकड़ा और फिर उसे प्यार करते हुए महल के अंदर की ओर चल दी।

इस दृश्य को देखकर तो बस यही कहा जा सकता है कि माँ तो आखिर माँ ही होती है।

ooooo

पिछली पुस्तक का सारांश

हैलो दोस्तों,

यह पुस्तक 'रिंग ऑफ अटलांटिस' सीरीज की पांचवीं पुस्तक है। क्या आपने इस पुस्तक को पढ़ने के पहले, इसका पहला, दूसरा, तीसरा व चौथा भाग पढ़ा है? अगर नहीं तो इस पुस्तक

का पूर्ण आनन्द उठाने के लिये, कृपया इसके पहले भाग ‘सन राइजिंग', दूसरे भाग ‘अटलांटिस', तीसरे भाग ‘मायावन', व चौथे भाग 'तिलिस्मा' को अवश्य पढ़ें। ....

अगर आप किसी कारणवश पिछली पुस्तकों को नहीं पढ़ना चाहते, तो आइये इन चारो पुस्तकों के सारांश को पढ़कर, उन पुस्तकों की यादों को ताजा कर लें-

पहले भाग ‘सन राइजिंग' का सारांशः-

माइकल अपनी पत्नि मारथा और अपनी 13 वर्षीय बेटी शैफाली के साथ, ‘सन राइजिंग' नामक पानी के जहाज से, न्यूयार्क से सिडनी जाने का प्लान बनाता है। उस जहाज से माइकल के कॉलेज के समय के प्रोफेसर, अलबर्ट भी सिडनी जाने वाले थे। चूंकि शैफाली अपने जर्मन शेफर्ड कुत्ते ब्रूनो के बिना नहीं जाना चाहती थी, इसलिये माइकल जहाज के कैप्टेन सुयश से, ब्रूनो को ले जाने के लिये विशेष अनुमति ले लेता है। अभी ये लोग बात कर ही रहे होते हैं, कि तभी जन्म से अंधी शैफाली को सोते समय कुछ विचित्र से सपने आते हैं। उन सपनों से शैफाली डरकर उठ जाती है। माइकल और मारथा को आश्चर्य होता है, कि जन्म से अंधी शैफाली को सपने कैसे आ सकते हैं?

सन राइजिंग न्यूयार्क बंदरगाह से अपने सफर पर चल पड़ता है। सन राइजिंग के डेक पर खड़ा ऐलेक्स, एक इटैलियन लड़की क्रिस्टी को देखता है जो 'वर्ल्ड फेमस बैंक रॉबरी' नामक, एक किताब पढ़ रही होती है। तभी क्रिस्टी के कॉलेज की दोस्त लॉरेन उसे मिल जाती है। क्रिस्टी, लॉरेन के साथ बात करते हुए, वहां से चली जाती है, पर उसकी किताब वहीं छूट जाती है, जिसे ऐलेक्स उठा लेता है।

उधर क्रिस्टी और लॉरेन एक दूसरे से अपनी पुरानी बातें शेयर करती हैं। क्रिस्टी को पता चलता है, कि लॉरेन का ब्वायफ्रेंड भी इसी जहाज पर है। क्रिस्टी लॉरेन से उसकी फोटो दिखाने के लिये जिद करती है। लॉरेन क्रिस्टी को अपने ब्वायफ्रेंड की फोटो, अगले दिन दिखाने का वादा करती है। लॉरेन बताती है कि वह इस जहाज पर ड्रीम्स डांस ग्रुप के साथ आयी है, जिसकी मुख्य डांसर जेनिथ के साथ वह उसके कमरे में रहती है।

शाम को ऐलेक्स क्रिस्टी का रुम नम्बर पता करके, उसकी किताब वापस करने जाता है और क्रिस्टी को डिनर पर चलने के लिये कहता है, पर क्रिस्टी ऐलेक्स में अपना इंट्रेस्ट नहीं दिखाती।

रात में डिनर के समय सन राइजिंग का कैप्टेन सुयश, सभी यात्रियों से अपने चालक दल का परिचय कराता है। इसके बाद जेनिथ और लॉरेन का डांस शुरु हो जाता है। डांस खत्म होने पर जेनिथ को वहां तौफीक दिखाई देता है। जेनिथ लॉरेन को बताती है, कि तौफीक ने एक

बार एक एक्सीडेंट से उसकी जान बचाई थी। वह लॉरेन से तौफीक का कमरा नम्बर पता करने को कहती है। तभी उनके कमरे में जैक और जॉनी नाम के 2 बदमाश घुस जाते हैं और जेनिथ से बद्तमीजी करने लगते हैं। यह देख लॉरेन जहाज के कप्तान और सिक्योरिटी के आदमियों को बुला लेती है। सुयश जैक और जॉनी को चेतावनी देकर छोड़ देता है।

तभी सन राइजिंग के कंट्रोल रुम में, न्यूयार्क बंदरगाह से बताया जाता है, कि उनके जहाज पर कुछ अपराधी भी घुस आये हैं। सुयश को कहा जाता है कि अपराधी को वह स्वयं से ढूंढे और अगले स्टापेज पर उसे इंटरपोल के हवाले कर दें।

सुयश असिस्टेंट कैप्टेन रोजर और सिक्योरिटी इंचार्ज लारा के साथ मिलकर, एक निशानेबाजी की प्रतियोगिता का प्लान बनाता है। जिसमें 28 प्रतियोगी भाग लेते हैं और तौफीक, लोथार और जैक क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार जीतते हैं। सुयश अब सिर्फ इन्हीं 28 प्रतियोगियों के कमरों को, अपनी सिक्योरिटी के लोगों को, न्यू इयर वाले दिन चेक करने को कहता है।

उधर अलबर्ट शैफाली का दिमाग चेक करने के लिये, शैफाली का अलग-अलग तरह से टेस्ट लेता है और शैफाली की प्रतिभा से प्रभावित हो जाता है। वहीं दूसरी ओर जेनिथ अपने प्यार का इजहार तौफीक से करती है।

उधर अगले दिन लॉरेन ऐलेक्स को अपना ब्वायफ्रेंड बनाकर क्रिस्टी से मिलाती है, पर क्रिस्टी अपने तेज सवालों से जान जाती है कि ऐलेक्स लॉरेन का ब्वायफ्रेंड नहीं है। उधर जॉनी, जैक से 10,000 डॉलर की शर्त लगा लेता है कि वह सबके सामने जेनिथ को 'किस' करके दिखाएगा। अपनी शर्त को पूरा करने के लिये जॉनी, जेनरेटर रुम में काम करने वाले आर्थर को, कुछ पैसे देकर अपना काम करने के लिये मना लेता है।

मगर जॉनी का पूरा प्लान जहाज के सिक्योरिटी इंचार्ज ब्रैंडन को पता चल जाता है, वह सुयश को बता देता है, कि जॉनी न्यू इयर के दिन, एक मिनट की लाइट ऑफ़ करवाकर, किसी को 'किस' करना चाहता है? सुयश ब्रैंडन को कहता है कि लाइट को 30 सेकेण्ड में ही ऑन करवा देना। इससे जॉनी प्लान के बीच में ही पकड़ा जायेगा।

न्यू ईयर के दिन जहाज के कंट्रोलरुम में जहाज का सेकेण्ड असिस्टेंट कैप्टेन असलम, सभी को शराब पिलाकर न्यू ईयर सेलीब्रेट करता है। उधर जहाज के हॉल में, जैसे ही न्यू इयर पर लाइट ऑफ़ होती है, एक गोली की आवाज सुनाई देती है और जब लाइट को जलाया जाता है, तो स्टेज पर लॉरेन की लाश दिखाई देती है, जिसके कि माथे पर एक गोली लगी होती है। हॉल से सुयश को एक रिवाल्वर भी बरामद हो जाती है। सुयश को लगता है कि जिसने भी गोली चलाई होगी? उसने जरुर रिवाल्वर को रुमाल से पकड़ रखा होगा। यह सोचकर सुयश सभी के रुमाल जमा करवाकर, लैब में चेक करने के लिये भेज देता है। बाद में ध्यान से देखने पर सुयश को लॉरेन के गले में पड़ा एक लॉकेट दिखाई देता है, जिसमें रेडियम लगा होता है।

सुयश समझ जाता है कि इसी रेडियम को देखकर, कातिल ने अंधेरे में गोली चलाई होगी। वह लॉरेन की लाश को स्टोर रुम में रखवा देता है।

बाद में सिक्योरिटी वाले बताते हैं, कि जब वो जैक का कमरा चेक कर रहे थे, तो उन्हें बगल वाले कमरे से कुछ अजीब सी आवाजें सुनाई दीं। सुयश उस रुम में जाकर चेक करता है, तो पता चलता है कि वो रुम शैफाली का है और वह विचित्र सी आवाज, ब्रूनो के दरवाजा खुरचने की वजह से आ रही थी। तभी शैफाली उसे कातिल की कुछ आदतों के बारे में बताती है। सुयश भी शैफाली के तर्क सुनकर, शैफाली से प्रभावित हो जाता है। तभी एक सिक्योरिटी का आदमी आकर बताता है, कि कंट्रोलरुम में कोई दरवाजा नहीं खोल रहा है।

सुयश कंट्रोलरुम का इमर्जेंसी दरवाजा खुलवाता है। कंट्रोलरुम के सभी सदस्य शराब के नशे में बेहोश पड़े थे। तभी उन्हें फ्लोरिडा से एक मैसेज मिलता है कि उनका जहाज गलत दिशा में भटक कर, बारामूडा त्रिकोण के खतरनाक क्षेत्र में पहुंच गया है।

तभी जहाज के ऊपर से एक नीली रोशनी बिखेरती उड़नतश्तरी निकलती है। जिसके निकलने के बाद जहाज के सारे इलेक्ट्रानिक यंत्र खराब हो जाते हैं। अभी सब लोग ठीक से समझ भी नहीं पाते हैं, कि तभी सन राइजिंग के आगे एक विशालकाय भंवर आ जाती है,

जिसमें सन राइजिंग फंस जाता है। सुयश के अनुभव और सूझबूझ से चालक दल जहाज को भंवर से निकालने में सफल हो जाते हैं। मगर भंवर से बचने के चक्कर में, सन राइजिंग बारामूडा त्रिकोण के क्षेत्र में और अंदर पहुंच जाता है।

सुयश सही रास्ते को पता करने के लिये रोजर को हेलीकॉप्टर से भेजता है, जहां एक रहस्यमय द्वीप को देखते हुए रोजर का हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। उधर सुयश के कपड़े, एक ब्लू व्हेल पानी उछालकर भिगो देती है, जिससे ब्रेंडन को सुयश की पीठ पर बना, एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू दिख जाता है।

उसी रात शैफाली के सोते समय, कोई उसके पास एक सोने का सिक्का छोड़ जाता है। अलबर्ट बताता है कि यह सोने का सिक्का, प्राचीन लुप्त शहर अटलांटिस का है, जिस पर वहां की देवी और एक डॉल्फिन का चित्र अंकित था। तभी शैफाली को फिर सपने आते हैं, जिसमें उसे एक रहस्यमय द्वीप और एक सुनहरा मानव दिखाई देता है।

अगले दिन असलम को वही रहस्यमय द्वीप दिखाई देता है, पर सुयश जहाज को उस द्वीप की ओर मोड़ने से मना कर देता है। सुयश लारा को ब्लैक थंडर नामक, एक जहाज की कहानी सुनाता है, जो 16 वर्ष पहले सन राइजिंग की ही भांति बारामूडा त्रिकोण में खो गया था। तभी लारा और सुयश को एक परछाई, अपने कंधे पर कोई चीज उठाए, भागती दिखाई देती है। दोनों उसका पीछा करते हैं, पर वह परछाई पानी में कूद जाती है। सुयश और लारा वहां डेक पर खड़े, अलबर्ट से पूछताछ करते है। पर उसके कुछ खास पता नहीं चलता।

सुयश को डेक की रेलिंग पर एक फटा हुआ कपड़ा मिलता है, जो वह अपने पास रख लेता है। तभी इन सभी को क्रिस्टी की चीख सुनाई देती है।

जब ये सब क्रिस्टी के कमरे में पहुंचते हैं तो इन्हें एक खतरनाक हरा कीड़ा दिखाई देता है, जो कि वहां खड़े एक गार्ड को मार देता है। तौफीक उस कीड़े को गोली मार देता है। अलबर्ट बताता है कि उस कीड़े को, इसके पहले साइबेरिया में देखा गया था। गार्ड की लाश को भी स्टोर रुम में रखने के लिये भेज दिया जाता है।

तभी गार्ड की लाश को ले जाने वाले दोनो व्यक्ति भागकर आते हैं और बताते हैं कि लॉरेन की लाश स्टोर रुम से गायब हो गयी है। सुयश सहित सभी व्यक्ति जब भागकर स्टोर रुम पहुंचते हैं, तो वह लॉरेन की लाश के साथ, अभी मरे गार्ड की लाश को भी गायब पाते हैं। सुयश ब्रूनो को गायब हुई, लॉरेन की लाश की जगह सुंघाता है, तो ब्रूनो भागकर एक डेक पर आ जाता है,जहां सुयश को एक रुमाल मिलता है, जो शायद लाश गायब करने वाले का था। उस रुमाल पर अंग्रेजी के 'जे' या उर्दू के 'लाम' जैसी आकृति बनी होती है। बहुत देर के वाद-विवाद के बाद भी, सुयश को पता नहीं चलता, कि वह रुमाल किसका है? सुयश दोबारा स्टोर रुम में आकर, ब्रूनो को फिर वह जगह सुंघाकर, पीछे की तरफ जाने का इशारा करता है। इस बार ब्रूनो जेनिथ के रुम के दरवाजे पर पहुंच जाता है। दरवाजा खोलने पर जेनिथ के कमरे का सारा सामान बिखरा हुआ दिखाई देता है, ऐसा लगता है जैसे किसी ने कमरे की तलाशी ली हो?

एक बार फिर स्टोर रुम में जाकर, सभी गार्ड की लाश की जगह की जांच करते हैं तो अलबर्ट को एक खिड़की के पास समुद्र का पानी गिरा हुआ दिखता है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे कोई खिड़की के द्वारा, समुद्र से आकर गार्ड की लाश ले गया हो?

उधर न्यूयार्क बंदरगाह पर राबर्ट और स्मिथ के पास एक व्यक्ति आकर, स्वयं को सन राइजिंग का सेकेण्ड असिस्टेंट कैप्टेन असलम बताता है। वह कहता है कि कोई उसे बेहोश कर, उसकी जगह लेकर सन राइजिंग पर चला गया है। जिसके बाद इस केस को हल करने के लिये जेरार्ड, सी.आई.ए के काबिल एजेंट, व्योम को इस मिशन पर भेज देता है।

उधर सुयश को दूसरी बार वही रहस्यमयी द्वीप दिखाई देता है। सुयश फिर उस द्वीप पर नहीं जाने का विचार करता है, पर लारा, सुयश को जबरदस्ती मनाकर, 2 गार्ड के साथ, उस द्वीप की ओर चल देता है, में मौजूद कोई रहस्यमय जीव लारा और दोनों गार्ड को मार देता है। पर पानी दूसरी ओर व्योम को समुद्र में वही रहस्यमय द्वीप दिखाई देता है, व्योम हेलीकॉप्टर से उस रहस्मय द्वीप के पीछे जाने की कोशिश करता है, पर उसे वह द्वीप पानी पर घूमता दिखाई देता है। उस द्वीप पर उसे पोसाइडन पर्वत के पास, एक झोपड़ी हवा में उड़ती हुई दिखाई देती है। इसके बाद उसका हेलीकॉप्टर द्वीप से निकली, रहस्यमय तरंगों का शिकार होकर हवा में लहराने लगता है। व्योम हेलीकॉप्टर को सुरक्षित पानी पर उतारने में सफल हो जाता है। अब वह हेलीकॉप्टर को बोट बनाकर, द्वीप की ओर बढ़ने लगता है। तभी पीछे से

आई एक विशालकाय पानी की लहर, व्योम की बोट को तोड़ देती है और व्योम पानी में गिरकर बेहोश हो जाता है। बेहोश होने से पहले वह देखता है, कि वह किसी सुनहरे मानव के हाथों में है।

सन राइजिंग पर ऐलेक्स को कुछ हरे कीड़े दिखाई देते हैं। वह ये बात सुयश और ब्रैंडन को बता देता है।बाद में अलबर्ट के साथ जब सभी उसके कमरे में पहुंचते हैं, तो उन्हें अलबर्ट की पत्नि मारिया, अपनी जगह से गायब दिखाई देती है, जिसके बाद अलबर्ट अर्द्धविक्षिप्त सा हो जाता है।

सुयश और ब्रैंडन दोबारा गश्त पर निकलते हैं, तभी जॉनी सीढ़ियों से आकर, उनके पास गिरता है और डेक पर जाकर लोथार को बचाने को कहता है। सुयश ब्रैंडन के साथ जब डेक पर पहुंचता है, तो उसे लोथार डेक की रेलिंग पर खड़ा दिखाई देता है। सुयश के मना करने के बाद भी लोथार, एक ओर इशारा करके पानी में कूद जाता है। जब सुयश की नजर उस दिशा में जाती है, तो वहां एक साया खड़ा होता है। सुयश उसे पकड़ने की कोशिश करता है, पर वह साया भी पानी में कूद जाता है। सुयश के हाथ में उस साये की शर्ट का फटा हुआ कॉलर आ जाता है, जिस पर रोजर की नेम प्लेट लगी होती है। दूसरी तरफ ब्रैंडन, पानी में गिरे लोथार को बचाने की बहुत कोशिश करता है, पर लोथार को पानी में मौजूद, कोई अंजान जीव खींच ले जाता है। बाद में जॉनी बताता है कि उसने लॉरेन की आत्मा को देखा था, जो कि लोथार को अपनी ओर बुला रही थी।

अभी ये लोग डेक पर खड़े ही होते हैं, कि तभी इन्हें पानी पर दौड़ता हुआ, एक सुनहरा मानव दिखाई देता है जो कि एक दिशा की ओर इशारा करके गायब हो जाता है। सुयश जहाज को उसी दिशा में मोड़ लेता है।

सन राइजिंग के डेक पर खड़े ऐलेक्स को, एक पहाड़ी तोता ऐमू दिखाई देता है, जो कि जाने क्यों सुयश को अपना दोस्त बताने लगता है। सुयश इस बार सन राइजिंग को ऐमू के आने वाली दिशा में मोड़ देता है।

थॉमस अपनी लैब में बैठा, लॉरेन के कत्ल के समय जमा किये, सभी रुमाल चेक कर रहा था। अचानक उसे लॉरेन के कातिल का पता चल जाता है। तभी लॉरेन का कातिल वहां पहुंचकर, थॉमस को भी मार देता है और लैब से सारे सबूत मिटाने के लिये लैब में आग लगा देता है।

उधर शैफाली को इस बार खुली आँखों से सपने दिखाई देते हैं, जिसके बारे में सुनकर असलम घबरा जाता है। शैफाली असलम से ऐसे सवाल करती है, कि सुयश को असलम पर शक हो जाता है। सुयश ड्रेजलर से इस बात की पुष्टि भी कर लेता है, कि न्यू ईयर की रात असलम ने ही सबको शराब पिलाई थी।

तभी पानी पर एक बार फिर से वही रहस्यमयी द्वीप दिखाई देता है। तभी सुयश को पता चलता है, कि सन राइजिंग का सारा फ्यूल किसी ने बिखेर दिया है। सुयश तब भी सन राइजिंग को उस द्वीप की ओर नहीं मुड़वाता है।

आगे बढ़ने पर सन राइजिंग को एक भयानक तूफान, 3 तरफ से घेर लेता है, तूफान से बचने के लिये, सुयश सन राइजिंग को द्वीप की ओर मुड़वा देता है। द्वीप की ओर जाता हुआ जहाज, एक झटके से रुक जाता है। सुयश पानी के नीचे 2 गोताखोरों को, जहाज के रुकने का कारण पता लगाने के लिये भेजता है, पर कुछ ही देर में दोनों गोताखोरों की लाशें पानी में नजर आती हैं। सुयश इस कारण का पता लगाने के लिये स्वयं पानी के नीचे जाने की बात करता है। मगर जैसे ही सुयश मोटरबोट को उतारकर, पानी में जाने वाला होता है, हैअचानक किसी अंजान कारणों से सन राइजिंग पानी में धंसना शुरु हो जाता है। यह देखकर जहाज पर खड़े कुछ यात्री, पानी में कूदकर उस बोट पर चढ़ जाते हैं और सन राइजिंग पानी में डूब जाता है।

कुछ बचे यात्रियों को ढूंढने के लिये, जब बोट को वापस उस क्षेत्र में लाया जाता है, तो शैफाली और ब्रूनो को छोड़कर कोई जिंदा यात्री उन्हें नहीं मिलता। तभी अचानक आश्चर्यजनक तरीके से, पानी पर तैर रही लाशें, पानी के अंदर समाने लगती हैं। सुयश सहित कुल 12 लोग ही इस खतरनाक हादसे में जिंदा बचकर, उस रहस्यमय द्वीप पर पहुचने में कामयाब हो पाते हैं। रात होने की वजह से, कोई भी द्वीप के अंदर दाखिल नहीं होता और सभी वहीं समुद्र किनारे सो जाते है।

◦◦◦◦◦

द्वितीय भाग 'अटलांटिस' का सारांशः

वेगा अपनी दोस्त वीनस के साथ, लाइब्रेरी में जाकर एक 500 वर्ष पुरानी किताब 'अटलांटिस का इतिहास' पढ़ता है, जिसमें अटलांटिस का इतिहास और एक कृत्रिम द्वीप 'अराका' का वर्णन था। किताब पढ़ने के बाद वेगा लाइब्रेरियन को सम्मोहित करके वह किताब अपने घर लेता जाता है।

उधर द्वीप पर बचे हुए लोग सुयश को ही अपना लीडर घोषित कर, उस रहस्यमयी जंगल में दाखिल हो जाते हैं। जंगल में शैफाली के द्वारा सीटी बजाने पर, पोसाईडन पर्वत पर मौजूद मूर्ति की आँखें लाल हो जाती हैं और शैफाली को एक फुसफुसाहट के रुप में एक शब्द 'अराका' सुनाई देता है। आगे बढ़ने पर उन्हें नीले रंग के फलों वाला, एक पेड़ दिखाई देता है, जो जैक द्वारा फल तोड़ने पर उसे ना देकर, वह सारे फल शैफाली के लिये तोड़कर नीचे गिरा देता है।

दूसरी ओर अंटार्कटिका की धरती पर जेम्स और विल्मर को बर्फ की खुदाई के दौरान, एक सुनहरी ढाल दिखाई देती है, जो कि एक सुनहरी दीवार से चिपकी होती है। वह सुनहरी दीवार जमीन के अंदर, 1 किलोमीटर के क्षेत्र में फैली थी। जेम्स और विल्मर अगले दिन ढाल को काटकर, निकालने का प्लान करके वहां से चले जाते हैं।

उधर जेनिथ एक जादुई बर्फ के तालाब में फंस जाती है, जहां पर एक मगरमच्छ मानव जेनिथ को मारने की कोशिश करता है, पर शैफाली के 'जलोथा' कहते ही वह मगरमच्छ मानव डरकर, वापस तालाब में समा जाता है।

वहीं दूसरी ओर जब वेगा 'अटलांटिस का इतिहास' किताब के साथ अपने घर पहुंचता है तो कार पार्किंग एरिया में, एक रहस्यमयी बाज वेगा पर हमला करके, उसकी किताब छीनने की कोशिश करता है, पर बाद एक सिक्योरिटी गार्ड द्वारा मारा जाता है। वेगा के जाने के बाद वह बाज धुंआ बनकर गायब हो जाता है। वेगा जब अपने कमरे में पहुंचता है, तो उसे न्यूज चैनल पर सन राइजिंग के गायब होने के बारे में पता चलता है, तभी वेगा के पास उसके भाई युगाका का फोन आता है, जहां वेगा अपने भाई से अटलांटिस की किताब का ज़िक्र करता है।

सुयश की टीम को जंगल में, कुछ अजीब सी आकृतियों वाले पत्थर मिलते हैं, जहां शैफाली उन्हें बताती है, कि उन पत्थरों को उसने अपने सपने में देखा था और वह पत्थर सभी का भविष्य बता रहे हैं। तभी ड्रेजलर के ऊपर एक अनाकोंडा सरीखा बड़ा सा अजगर हमला कर देता है। सभी ड्रेजलर को बचाने की बहुत कोशिश करते हैं, पर आखिर में ड्रेजलर मारा जाता है।

उधर वेगा की बात सुनकर युगाका परेशान हो जाता है, इस परेशानी से बचने के लिये युगाका, अपने बाबा कलाट से मिलता है। कलाट अपने तीन वैज्ञानिक 'किरीट-रिंजो-शिंजो' से कहकर, युगाका को वेगा के लिये एक 'जोडियाक वॉँच' दिलवा देता है, जिसमें 12 राशियों की शक्तियां थीं, जो वेगा को मुसीबत के समय छिप कर उसे बचातीं।

उधर सुयश की टीम शाम होने के बाद एक छोटे से तालाब के पास जाकर रुक जाते हैं, जहां शैफाली रात में सबसे उनके डार्क सीक्रेट बताने को कहती है। ऐलेक्स अपने सीक्रेट के तौर पर एक बैंक डकैती का राज खोल देता है, जिसमें बैंक डकैती के दौरान जैक और जॉनी ने मिलकर, एक व्यक्ति को गोली मार दी होती है। ब्रैंडन बताता है कि जैक और जॉनी ही वह अपराधी थे, जिनके लिये सन राइजिंग पर फोन आया था।

आधी रात को जब जेनिथ जागती है, तो उसे एक लड़की क्रिस्टी बनकर, बहका कर एक दिशा में ले जाने की कोशिश करती है, पर असली क्रिस्टी के जाग जाने पर, वह इस कार्य में सफल नहीं हो पाती है।

जेम्स और विल्मर दूसरे दिन उस सुनहरी ढाल को काटने की कोशिश करते हैं, पर वह इस कार्य में सफल नहीं हो पाते, तभी जेम्स के छूने से वह ढाल जमीन में समा जाती है। जेम्स और विल्मर को वहां से जमीन में जाती हुई सीढ़ियां दिखाई देती हैं। कुछ अजीब से तिलिस्मी रास्तों को पार करने के बाद, जेम्स और विल्मर वहां मौजूद देवी शलाका और उनके 7 भाईयों को जगा देते हैं, जो कि 5000 वर्ष से, वहां शीतनिद्रा में सो रहे थे। देवी शलाका जेम्स और विल्मर से बाद में बात करने को कह, उन्हें एक कमरे में रुकने को कहती हैं, उस कमरे में बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता।

उधर जंगल में सबको किसी के रोने की आवाज सुनाई देती है, तभी सबको अपने पास से शैफाली गायब दिखाई देती है। ढूंढने पर शैफाली उन्हें एक पेड़ के पास दिखाई देती है। वह नयनतारा पेड़ शैफाली को पकड़ कर, उसकी आँख में अपने एक फल का रस निचोड़ देता है, जिसकी वजह से आश्चर्यजनक तरीके से, जन्म से अंधी शैफाली की आँखें आ जाती हैं।

उधर युगाका, वेगा के जन्मदिन के एक दिन पहले, उसे जोडियाक वॉच गिफ्ट कर देता है।

जंगल में सभी को शलाका मंदिर दिखाई देता है, जो भारतीय कला के हिसाब से बना दिखाई देता है, जहां पर एक छोटे से तिलिस्म को पार कर, सुयश देवी शलाका की मूर्ति को छू लेता है। तभी सुयश के शरीर पर बने टैटू से, सतरंगी किरणें आकर टकराती हैं और सुयश के टैटू में एक अंजानी शक्ति प्रवेश कर जाती है।

उधर जब रोजर का हेलीकॉप्टर धुंध में फंसकर, अराका द्वीप पर गिरता है, तो रोजर को पायलेट की लाश, एक शेर ले जाता दिखाई देता है, जो पायलेट की लाश को जंगल में बने, एक पिरामिड के बाहर रख कर, एक दिशा की ओर चला जाता है। रोजर उस शेर का पीछा करता है, एक झरने के पास जाकर वह शेर एक इंसानी आकृति में बदल जाता है और उस झरने के पीछे, छिपे रास्ते में प्रवेश कर जाता है। रोजर उस व्यक्ति का पीछा करते हुए, एक ऐसे कमरे में पहुंचता है, जहां पर एक लड़की आकृति को, एक तांत्रिक कुछ समझा रहा होता है। आकृति का चेहरा देवी शलाका से मिलता है। तांत्रिक के जाने के बाद आकृति रोजर को, अराका के कई रहस्यों के बारे में बताती है। जहां आकृति रोजर से सन राइजिंग को भटकाने की बात करती है और रोजर को एक कमरे में बंद कर देती है।

उधर सुयश को जंगल में फिर ऐमू मिल जाता है। तभी सुयश को एक आदमखोर पेड़ पकड़ लेता है। इस मुसीबत से सुयश को, उसके शरीर पर बना टैटू बचाता है। आदमखोर पेड़ सुयश के टैटू से निकली सुनहरी रोशनी से जल जाता है।

दूसरी ओर कुछ दिन पहले आकृति, रोजर को सुनहरा मानव बनाकर, सन राइजिंग को भटकाने के लिये भेजती है। रास्ते में रोजर पानी में बेहोश हुए व्योम को बचाकर, अराका द्वीप के किनारे रख देता है और स्वयं सन राइजिंग की ओर चल पड़ता है। परंतु सन राइजिंग के पास पहुंचकर, रोजर सुयश को सही राह दिखाता है।

सुयश और उसकी टीम को रास्ते में कुछ खंडहर दिखाई देते हैं, जहां रात गुजारने के लिये वो लोग रुकने की सोचते हैं, तभी एक घंटा बजाने पर, जमीन से एक सोने का सिंहासन निकलता है, जिस पर बैठते ही सुयश, समय के चक्र को तोड़ 5020 वर्ष, पहले के काल में हिमालय पर पहुच जाता है। हिमालय पर उसे अपनी ही शक्ल का एक इंसान, आर्यन दिखाई देता है, जो शलाका और अन्य 11 लोगों के साथ एक रहस्यमयी विद्यालय 'वेदालय' में पढ़ रहा होता है। वहां सुयश को 15 अद्भुत लोक के बारे में पता चलता है। जहां पर एक प्रतियोगिता के दौरान, आर्यन और शलाका को, दूसरे लोगों से प्रतिस्पर्धा करते हुए, किसी धेनुका नाम की गाय से स्वर्णदुग्ध लाना रहता है। इस पूरी प्रतियोगिता में सुयश भी आर्यन और शलाका के साथ, ऊर्जा के रुप में रहता है। सुयश को उस समयकाल में ऐमू भी दिखाई देता है, जिसकी जान आर्यन ही बचाता है। अपने बुद्धिकौशल से आर्यन यह प्रतियोगिता जीत जाता है। सुयश को उस विद्यालय में आकृति नाम की एक लड़की भी दिखाई देती है, जो आर्यन को शलाका के साथ देखकर जलती है।

सुयश उस समयचक्र से वापस आकर, सभी को अपनी कहानी के बारे में सुना देता है। जहां सुयश को ये महसूस होता है, कि आर्यन उसका ही पिछले जन्म का नाम है। सबके सो जाने के बाद युगाका, बैंडन को बहुत ही खौफनाक सपना दिखाकर डरा देता है, उस सपने में ब्रैंडन को सभी लोग मरे दिखाई देते हैं।

वहीं दूसरी ओर लुफासा, सीनोर की सेनापति सनूरा के साथ, मकोटा से मिलने उसके महल जाता है, जहां मकोटा उसे हर रोज एक लाश लाकर, पिरामिड में रखने को कहता है।

लुफासा अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग कर, छिपकर पिरामिड में जाकर देखता है, तो उसे पता चलता है कि अंधेरे का देवता जैगन पिरामिड में बेहोश पड़ा है और मकोटा वहां लाशों के साथ कोई प्रयोग कर रहा है। तभी मकोटा का सेवक वुल्फा मच्छर बने लुफासा को मार देता है।

बाद में लुफासा से पता चलता है, कि सन राइजिंग से लॉरेन और गार्ड की लाश लुफासा ही लेकर भागा था। लुफासा ने ही व्हेल बनकर व्योम की बोट को डुबाया था और उसी ने ऑक्टोपस बनकर लोथार और लारा को मारा था।

अगले दिन जंगल में सबके कहने पर, ब्रूनो को आगे-आगे चलाया जाता है, जहां युगाका के एक इशारे पर, एक पेड़ से एक बेर के समान फल टूटकर, ब्रूनो के सिर पर गिरता है। फल के सिर पर गिरने से, ब्रूनो के पंख निकल आते हैं और ब्रूनो उड़कर गायब हो जाता है। यह देख शैफाली रोने लगती है, पर ऐमू के चिढ़ाने पर गुस्सा होकर ऐमू को देखती है। ऐमू को घूरने की वजह से शैफाली की आँखों में, ऐमू की तस्वीर छप जाती है, जो कुछ देर बाद अपने आप सही हो जाती है।

उधर अगले दिन वेगा अपने जन्मदिन पर, वीनस को लेकर पोटोमैक नदी के किनारे, कायक चला रहा होता है, तभी उस पर बारी-बारी से टुंड्रा हंस और बुल शार्क हमला करती है। लेकिन

वेगा के हाथ में बंधी जोडियाक वॉच से 2राशियां कर्क और मीन निकलकर वेगा की रक्षा करती हैं।

उधर व्योम को जब होश आता है, तो वह अपने आप को अराका द्वीप के किनारे पर पड़ा हुआ पाता है। व्योम रहस्य का पता लगाने के लिये, जंगल में जाने की कोशिश करता है, पर जंगल के चारो ओर किसी अदृश्य दीवार के होने की वजह से, वह जंगल में प्रवेश नहीं कर पाता। कुछ दिन उसी तट पर बीत जाने के बाद, एक दिन व्योम को द्वीप के किनारे, एक ब्लू व्हेल तैरती हुई दिखाई देती है, व्योम पानी में घुसकर उस व्हेल का पीछा करते हुए, द्वीप के एक ऐसे अंजान हिस्से में पहुंच जाता है, जहां एक कम्प्यूटर प्रोग्राम कैस्पर द्वारा, एक तिलिस्म का निर्माण हो रहा होता है। व्योम को वहां बहुत सी अनोखी चीजें दिखाई देती हैं। व्योम उस स्थान के एक कमरे में रखी ट्रांसमिट मशीन से ट्रांसमिट होकर, सामरा राज्य के अंदर पहुंच जाता है।

जंगल में जा रहे सुयश की टीम का सामना, एक जंगली सुअर से होता है, सुअर असलम को दौड़ा लेता है। असलम सुअर से बचने की कोशिश में, एक दलदल में गिर जाता है। मरने से पहले असलम सभी को बताता है, कि उसका नाम सिलेस्टर डिकोस्टा है। वह असलम को मारकर असलम का भेष बनाकर, सन राइजिंग पर आ गया था। सिलेस्टर कहता है कि सन राइजिंग को उसी ने जानबूझकर गलत दिशा में मोड़ा था। सिलेस्टर अपना काला बैग देकर मर जाता है। सिलेस्टर के काले बैग से सभी को एक नक्शा, एक लॉकेट और सिलेस्टर के पिता विलियम डिकोस्टा की डायरी मिलती है। जब जेनिथ उस काले बैग से निकले लॉकेट को देख रही होती है, तभी आश्चर्यजनक ढंग से वह लॉकेट, अपने आप जेनिथ के गले में बंध जाता है। विलियम डिकोस्टा की डायरी पढ़ने पर सबको पता चलता है, कि 16 साल पहले विलियम डिकोस्टा का जहाज भी भटककर, उस द्वीप पर आया था। जहाज के सारे लोग मर जाते हैं। सिर्फ विलियम अपने दोस्त गिल्फोर्ड के साथ बचता है। अनेक परेशानियों का पारकर, विलियम द्वीप के अंदर की ओर पहुंच जाता है, जहां कुछ जंगली विलियम और गिल्फोर्ड को अपने देवी के मंदिर में बांध देते हैं। देवी की मूर्ति के पास विलियम को एक खजाना बिखरा हुआ दिखाई देता है। विलियम वहां पड़े एक हीरे की मदद से, अपनी और गिल्फोर्ड के हाथ की रस्सियां काटकर, वहां से भाग जाते हैं। गिल्फोर्ड देवी के पैर के पास रखी एक लाल किताब को उठा ले जाता है और विलियम देवी के गले में पड़े लॉकेट को उतार लेता है। जंगली लगातार उन दोनों का पीछा करते हैं। जंगलियों से बचने के लिये गिल्फोर्ड लाल किताब को लेकर, एक पेड़ पर चढ़कर छिप जाता है, जबकि विलियम एक गुफा में छिप जाता है। गुफा एक भालू की होती है, परंतु जब भालू विलियम पर आक्रमण करता है, तो विलियम के गले में मौजूद लॉकेट विलियम की जान बचाता है। विलियम गुफा के दूसरी तरफ से बाहर निकलता है। द्वीप के उस तरफ किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं होता। विलियम कुछ दिन वहां गुजारकर, एक नाव का निर्माण करता है और उसी नाव से उस द्वीप से बचकर भाग निकलता है। बाद में एक दूसरे जहाज के लोग विलियम को बचा लेते हैं।

विलियम मरने से पहले अपनी डायरी, द्वीप का नक्शा और देवी का लॉकेट, सिलेस्टर को देकर मर जाता है। यह कहानी पढ़कर सुयश को द्वीप के काफी राज पता चल जाते हैं।

उधर युगाका कुछ समय पहले अपनी बहन त्रिकाली के साथ, एक आधुनिक ड्रोन में बैठकर सन राइजिंग को बचाने की कोशिश करता है, पर लुफासा विकराल ऑक्टोपस बन कर, सन राइजिंग को डुबा देता है। उसी स्थान पर हरे कीड़ों से बचने के प्रयास में, त्रिकाली की बर्फ की शक्तियां जाग जाती हैं। इन शक्तियों के बारे में त्रिकाली को भी नहीं पता होता है।

उधर जंगल में युगाका ऐलेक्स को बेहोश करके, ऐलेक्स बनकर सुयश की टीम में शामिल हो जाता है। ऐलेक्स बना युगाका सबको भ्रमित करने के लिये एक फल को खाकर, अपनी आवाज जाने का नाटक करता है, पर शैफाली युगाका को पहचान जाती है। वह युगाका के सिर पर एक डंडा मारकर उसे बेहोश कर देती है। होश में आने के बाद युगाका, खतरनाक तरीके से सब पर आक्रमण कर, उन्हें अपनी वृक्ष शक्ति से जकड़ लेता है। यह देख शैफाली युगाका से कुछ क्षणों के लिये, उसकी वृक्ष शक्ति छीन लेती है। यह देख युगाका घबरा कर शैफाली से माफी मांगता है और उनकी मदद करने का वचन देता है। तभी युगाका के पास एक इमर्जेंसी सिग्नल आता है, जिसकी वजह से युगाका इन्हें बाद में मिलने को कह, वहां से सामरा राज्य की ओर चला जाता है। ऐलेक्स के गायब होने वाले स्थान पर किसी को ऐलेक्स दिखाई नहीं देता।

दूसरी ओर देवी शलाका के कमरे में बंद जेम्स को, दीवार में एक रहस्यमयी द्वार दिखाई देता है, उस द्वार से होते हुए जेम्स हिमालय के पास पहुंच जाता है। उसी समय हिमालय पर बर्फबारी शुरु हो जाती है, जिससे बचने के लिये जेम्स एक गुफा में शरण लेता है। उस गुफा में एक विशालकाय यति था जो जेम्स को पकड़कर शिवन्या और रुद्राक्ष की जेल में बंद कर देता है।

व्योम ट्रांसमिट होकर सामरा द्वीप पहुंच जाता है, जहां व्योम एक हाथी को विचित्र फल खाते देखता है। उस विचित्र फल को खाकर, हाथी का आकार एक चूहे के बराबर हो जाता है। व्योम कुछ फलों को अपने पास रख लेता है। फिर व्योम एक पहाड़ी पर चढ़कर, एक विशालकाय वृक्ष के पास पहुंच जाता है। उस वृक्ष से कुछ किरणें निकलकर व्योम के शरीर में प्रवेश कर जाती हैं।

उधर युगाका कलाट के पास पहुंचता है, जहां कलाट उसे बताता है कि कोई बाहरी व्यक्ति सामरा द्वीप में घुस आया है। उस व्यक्ति के बारे में जानने के लिये कलाट, युगाका को लेकर महावृक्ष के पास आता है और महावृक्ष से, जलतत्व से बनी पुस्तक 'सागरिका' को खोलने की बात करता है। महावृक्ष अपनी चमत्कारी शक्तियों से, कलाट और युगाका को समुद्र के अंदर मौजूद अटलांटिस की धरती पर भेज देता है। जहां पर सागरिका एक पहेली के माध्यम से, कलाट को एक मैसेज देती है।

सुयश और उसकी टीम को जंगल में, एक साफ स्थान पर एक खूबसूरत पार्क बना दिखाई देता है। पार्क में 'मेडूसा', जलपरी और एक ड्रैगन की मूर्ति बनी होती है। जलपरी की मूर्ति से निकलती शराब को पीकर, जॉनी एक बंदर में परिवर्तित हो जाता है और उछलकर जंगलों में भाग जाता है। रात में वहां सोते समय मेडूसा की मूर्ति सजीव हो जाती है और शैफाली को एक महाशक्ति मैग्ना के सपने दिखाती है, जिसमें मैग्ना एक इँगो पर सवार होकर, समुद्र की तली में मौजूद एक स्वर्ण महल से, तिलिस्म तोड़कर एक शक्तिशाली पंचशूल प्राप्त करती है।

वहां रात में सो रही जेनिथ को एक रहस्यमयी आवाज सुनाई देती है। यह आवाज उसके गले में पड़े देवी के लॉकेट से आ रही होती है। जेनिथ को पता चलता है कि उस लॉकेट में एक महाशक्तिशाली शक्ति का वास है, जो कि दूसरी आकाशगंगा से आया है। वह शक्ति समय को नियंत्रित करना जानता था, इसलिये जेनिथ उस शक्ति का नाम 'नक्षत्रा' रख देती है और उसे अपना दोस्त बना लेती है। नक्षत्रा दोस्त बनने के बाद, जेनिथ को तौफीक की बहुत सी सच्चाई के बारे में बता देता है, जिससे जेनिथ जान जाती है कि सन राइजिंग पर होने वाले, कुछ कत्ल को तौफीक ने किया था। जिसे वह अपना सबसे प्यारा दोस्त मान रही थी, वही इस कहानी का सबसे बड़ा विलेन था। नक्षत्रा यह रहस्य सभी को बताने को मना कर देता है।

इधर शलाका जब अपने कमरे में पहुंचती है तो उसे जेम्स कहीं दिखाई नहीं देता। शलाका जेम्स को बचाने के लिये 5000 वर्ष बाद हिमालय पर पहुंचती है। उसे रुद्राक्ष और शिवन्या से जेम्स के बारे में पता चल जाता है, पर रुद्राक्ष और शिवन्या शलाका को एक दिन वहीं रुकने के लिये कहते हैं।

उधर रास्ते में जंगल में बैंडन को एक भौंरा परेशान करता है, ब्रैंडन उस भौरे को हाथ से मारकर जमीन में गिरा देता है। वह भौंरा गिरने के बाद एक विशालकाय चक्रवात में परिवर्तित हो जाता है और ब्रैंडन को अपने में लपेटकर हवा में गायब हो जाता है।

दूसरी ओर मकोटा अंधेरे के देवता जैगन को जगाने के लिये, लुफासा को हिमालय पर मौजूद एक शिव मंदिर से 'गुरुत्व शक्ति' लाने के लिये भेजता है। लुफासा गरुण का रुप धरकर, हिमालय से गुरुत्व शक्ति लाने की कोशिश करता है, पर रुद्राक्ष और शिवन्या अपनी मानसिक तरंगों से, लुफासा के एक रुप को नष्ट कर देते हैं, मगर लुफासा ड्रैगन का रुप धरकर गुरुत्व शक्ति ले जाने में सफल हो जाता है।

रुद्राक्ष और शिवन्या के परेशान होने पर, गुरु नीमा महाशक्तिशाली यति हनुका को, लुफासा से गुरुत्व शक्ति छीनकर लाने को कहते हैं।

तृतीय भाग 'मायावन' का सारांश:

क्षीर सागर में हो रहे समुद्र मंथन से कालकूट विष निकलता है, जिसकी तीक्ष्ण गंध और धुंए से सभी देवताओं और दैत्यों का दम घुटने लगता है। सभी मिलकर महादेव का स्मरण करते हैं। महादेव इस हलाहल को पी जाते हैं। उनके पीते समय इस कालकूट विष की एक बूंद पृथ्वी पर जा गिरती है। जहां पर यह बूंद गिरती है, वहां पर एक अद्भुत पुरुष उत्पन्न होता है, जिसका नाम महादेव, नीलाभ रखते हैं। महादेव, नीलाभ को हिमालय पर जाकर, लोगों को वेदों की शिक्षा देने के लिये कहते हैं।

दूसरी ओर एक जलमानव नोफोआ, पोसाईडन को जाकर समुद्र की लहरों पर तैर रहे, एक अद्भुत महल के बारे में बताता है। पोसाईडन उस अद्भुत महल में जाकर, उसके निर्माता मैग्ना और कैस्पर से मिलता है और उन्हें समुद्र के अंदर वैसा ही एक महल बनाने का प्रस्ताव देता है।

हिमालय पर नन्हा बाल गणेश अपने हाथ में मोदक लेकर, अपने मूषक को चिढ़ाते हुए जा रहा था कि स्वर्ग की अप्सरा मणिका गणेश को अपशब्द बोल देती है। गणेश मणिका को श्राप देकर कोयल में बदल देते हैं और

कहते हैं कि मणिका के विवाह के 20,000 वर्ष बाद ही उसे पुत्र की प्राप्ति होगी।

उधर जीयूष के पुत्र मेरोन और हेडिस की पुत्री सोफिया अपने पिताओं की इच्छा के विरुद्ध, भागकर शादी कर लेते हैं, जिससे कुपित होकर जीयूष, पोसाईडन को उन्हें मारने के लिये कह देता है। इस घटना के 1 वर्ष बाद, जब सोफिया और मेरोन नाइट ओशन नामक जहाज से, अपने पुत्र कैस्पर के साथ जा रहे होते हैं, तो जीयूष कैस्पर पर थंडरबोल्ट से प्रहार करता है, पर एक अदृष्य कवच कैस्पर को बचा लेता है। क्रुद्ध होकर पोसाईडन उस जहाज को समुद्र में डुबो देता है। सोफिया और मेरोन कैस्पर को बचाने के लिये, समुद्र की गहराई में चले जाते हैं, जहां नोफोआ उन पर हमला कर देता है। तभी एक ब्लू व्हेल सोफिया, मेरोन और कैस्पर को अपने मुंह में दबा कर वहां से चली जाती है। परंतु आश्चर्यजनक तरीके से तीनों ही ब्लू व्हेल के मुंह में सुरक्षित होते हैं। ब्लू व्हेल उन्हें लेकर ब्लू होल की समुद्री गुफा में ले जाती है। जहां इनकी मुलाकात, एक स्त्री माया से होती है। माया बताती है कि उसी ने कैस्पर को थंडरबोल्ट से बचाया था। सोफिया और मेरोन, कैस्पर को माया के पास सुरक्षित कर, हैडिस से क्षमा मांगने अंडरवर्ल्ड चले जाते हैं।

दूसरी ओर सुयश अपनी बची हुई टीम के साथ, जब एक घास के मैदान को पार कर रहा होता है, तो वहां की घास में आग लग जाती है, जिससे अलबर्ट अपनी सूझबूझ से सभी को बचा लेता है, पर आखिर में क्रिस्टी, जैक को उस आग में धक्का दे देती है। वह बताती है कि बैंक डकैती के दौरान जिस आदमी को, जैक ने गोली मारी थी, वह उसके पापा थे और वह उसी का बदला लेने के लिये सन राइजिंग पर आयी थी।

उधर महाबली हनुका, लुफासा का पीछा करते हुए उसे अराका द्वीप के ऊपर घेर लेता है। लुफासा कई रुप बदलकर हनुका को भ्रमित करने की कोशिश करता है, पर आखिर में

हनुका, लुफासा को हरा देता है, परंतु इस युद्ध में गुरुत्व शक्ति की डिबिया अराका द्वीप में गिर जाती है। हनुका उस डिबिया को पकड़ने की कोशिश में, एक अदृश्य दीवार से टकरा जाता है, वह दीवार उसकी माता, माया की शक्तियों से ही निर्मित थी, इसलिये हनुका उस दीवार को नहीं तोड़ता और वह खाली डिबिया लेकर हिमालय की ओर वापस चल देता है।

उधर मैग्ना और कैस्पर माया के पास पहुंच उसे मायामहल में रहने को कहते हैं। तब माया उन्हें अपनी कहानी सुनाती है कि किस प्रकार गणेश के श्राप से, कोयल बनी मणिका एक कुंए में शरण ले लेती है। उसी कुंए में दैत्यराज मयासुर भगवान शिव की तपस्या कर रहा था। तपस्या के बाद वह मणिका को पुनः स्त्री में बदलकर, उसका नाम माया रख देता है और उसे अपनी पुत्री के रुप में स्वीकार कर लेता है। बाद में मयासुर माया का विवाह नीलाभ से कर देता है। विवाह के कुछ समय बाद माया को पता चलता है कि नीलाभ के शरीर में विष भरा है, वह उससे विवाहोपरांत सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकती। यह सुन माया निराश हो जाती है। तभी नीलाभ उसे 15 लोकों का निर्माण करने को कहता है, जिसके द्वारा एक अद्भुत विद्यालय वेदालय की स्थापना की जा सके। माया अगले 5 वर्षों में 15 लोकों का निर्माण कर देती है। निर्माण के बाद माया नीलाभ से छिपकर, भगवान गणेश की साधना के लिये घर छोड़ कर चली जाती है। 800 वर्षों के अथक तप के बाद भगवान गणेश माया को 20,000 वर्ष तक समुद्र के अंदर छिपकर एक गुप्त साधना करने के लिये कहते हैं। इस गुप्त साधना में माया को रोज, इस पृथ्वी के सबसे जहरीले नाग और नागिन के जहर का सेवन करना था। तक्षक का विष तो माया को आसानी से मिल जाता है, पर स्थेनो अपने जहर के बदले, उसे एक बच्ची को पालने और शिक्षा देने के लिये कहती है। माया मान जाती है और उस बच्ची का नाम मैग्ना रखकर उसे अपने पास रख लेती है। वहीं से माया, एक नयी सभ्यता का निर्माण भी करती है, जिसे बाद में माया सभ्यता के नाम से जाना गया। बाद में जब कैस्पर माया से पोसाईडन के महल के निर्माण के बारे में पूछता है, तो वह कहती है कि कुछ भी बनाओ? पर वहां कुछ गुप्त शक्तियों को अवश्य छोड़ देना, जिससे समय आने पर वहां का नियंत्रण अपने हाथ में ले सको।

उधर सुयश जब पहाड़ के दूसरी ओर देख रहा होता है, तो उसके पैर से एक छोटा पत्थर, वहां सो रहे एक स्पाइनोसोरस के ऊपर गिर जाता है, जिससे वह स्पाइनासोरस जागकर, उन पर आक्रमण कर देता है। यहां जेनिथ नक्षत्रा की शक्तियों का प्रयोग कर, उस स्पाइनासोरस को मार देती है। यहां जेनिथ को नक्षत्रा की एक नयी शक्ति के बारे में पता चलता है, जिसके द्वारा नक्षत्रा, जेनिथ के चोट खाए शरीर को सही कर देता है।

दूसरी ओर व्योम अपने जेब में रखे उस फल को खाकर, चींटी से भी छोटा हो जाता है। एक चींटी उसे खाना समझ उस पर हमला करती है, पर व्योम अपने को बचाने में कामयाब हो जाता है। तभी व्योम को पेड़ के नीचे से जा रहे रिजो-शिंजो दिखाई देते हैं, जो एक यंत्र के द्वारा किसी महाशक्ति की तलाश कर रहे होते हैं। व्योम रिंजो की टोपी पर बैठ जाता है। रिंजो-शिंजो वहां से किसी झील के पास पहुंचते हैं। महाशक्ति झील के ही अंदर थी, पर अपने

पानी के डर के कारण रिजो-शिंजो वहां से बिना शक्ति लिये हुए ही चले जाते हैं। उनके जाने के बाद व्योम झील में कूद जाता है, जहां एक समुद्री घोड़ा उसे बंदी बनाकर, झील में स्थित एक पंचशूल के पास छोड़ देता है। व्योम जैसे ही उस त्रिशूल को छूता है, पंचशूल से निकली तेज ऊर्जा व्योम का पूरा शरीर जला देती है। व्योम मरणासन्न हालत में झील के बाहर गिरता है। तभी आसमान से गुरुत्व शक्ति की आखिरी बूंद व्योम के मुंह में आकर गिर जाती है। गुरुत्व शक्ति के माध्यम से व्योम ठीक होकर, उस पंचशूल को भी प्राप्त कर लेता है। पंचशूल को उठाने के बाद व्योम की कलाई पर, एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू बन जाता है।

उधर रुद्राक्ष, और शिवन्या हनुका का इंतजार कर रहे होते हैं, कि तभी उन्हें आसमान से हनुका आता हुआ दिखाई देता है। हनुका डरते-डरते गुरुत्व शक्ति की डिबिया रुद्राक्ष को दे देता है। रुद्राक्ष जब डिबिया खोलता है तो उसमें गुरुत्व शक्ति मौजूद होती है, जिसे देखकर हनुका समझ जाता है कि गुरुत्व शक्ति अवश्य ही किसी सही व्यक्ति को मिली है। हनुका गुरुत्व शक्ति को वापस शिव मंदिर में रख देता है। इसके बाद शलाका, रुद्राक्ष और शिवन्या से आज्ञा ले, जेम्स को लेकर वापस अंटार्कटिका आ जाती है।

दूसरी ओर सुयश जब बचे हुए लोगों के साथ, एक दर्रे से निकल रहा होता है, तो उसे वहां उड़ने वाले डायनासोर टेरोसोर के अंडे दिखाई देते हैं। वहां 2 नन्हें टेरोसोर तौफीक पर हमला कर देते हैं। अलबर्ट जब तौफीक को बचाने जाता है, तभी एक विशाल टेरोसोर अलबर्ट को लेकर उड़ जाता है।

उधर जब वेगा अपने स्वीमिंग क्लब में जाता है तो पानी में उस पर एक ईल मछली हमला कर देती है, वेगा किसी प्रकार उससे बचकर बाहर आ जाता है, तो उस पर एक 10 फुट लंबा काला नाग हमला कर देता है, जहां पर जोडियाक वॉच से निकलकर, कुम्भ राशि उसे बचा लेती है। वेगा क्लब से वापस अपने घर की ओर चल देता है। रास्ते में धरा और मयूर उसका पीछा करते हैं। एक स्थान पर फल खरीदते समय जब धरा, वेगा की ओर जाती है, तभी एक खतरनाक सांड की टक्कर से धरा बेहोश हो जाती है। वेगा, मयूर और धरा को अपने घर ले जाता है।

उधर ऐलेक्स को जब जंगल में होश आता है, तो उसे एक पेड़ से निकलकर जाती हुई, विषकन्या स्थेनो दिखाई देती है। स्थेनो के जाने के बाद ऐलेक्स उस पेड़ के पास पहुंचकर देखता है। वहां पेड़ में एक कोटर बनी थी। ऐलेक्स उस कोटर से होते हुए, एक 20 फुट गहरे कमरे में गिर जाता है। जहां पर उसे एक 3 सिर वाला सर्प विषाका, बेवकूफ बनाकर अपनी मणि और सुनहरी बोतल लेकर भाग जाता है। ऐलेक्स अब उस अंधेरे कमरे में फंस गया था।

दूसरी ओर सुयश अपनी टीम के साथ एक सूखी नदी के पास रुक जाता है, जहां क्रिस्टी द्वारा रेत पर ऐलेक्स की तस्वीर बनाने पर, एक रेत मानव व कुछ अन्य रेत से बनी आकृतियां, सभी पर हमला कर देती हैं, पर क्रिस्टी अपनी फूर्ती और तेज दिमाग से सभी को खत्म कर

देती है। बाद में क्रिस्टी को नदी से एक सुनहरी रेत भरी पेंसिल मिलती है, जिसे वो अपने पास रख लेती है।

उधर व्योम को जंगल में एक खूबसूरत लड़की दिखाई देती है, जो महाकाली की मूर्ति के पास पूजा कर रही होती है, कि तभी उस पर पीछे से गोंजालो नाम का एक विचित्र जीव हमला कर देता है। व्योम गुरुत्व शक्ति और पंचशूल की मदद से गोंजालो को घायल कर देता है। वह लड़की बताती है कि उसका नाम त्रिकाली है और वह सामरा राज्य की राजकुमारी है। त्रिकाली व्योम की शक्तियां देख उस पर मोहित हो जाती है और व्योम की बिना जानकारी के उससे रक्षासूत्र बंधवा कर शादी कर लेती है। व्योम, त्रिकाली के साथ उसके महल चला जाता है।

वहीं दूसरी ओर सुयश की टीम को, 2 पहाड़ों के बीच एक आर्क दिखाई देता है, इस आर्क के बीच से एक नदी निकलकर जा रही होती है। बाद में पता चलता है कि यह मैग्ना के द्वारा बनाया गया आर्क है, जिसे मैग्नार्क कहते हैं। यहां एक प्रकार का छोटा तिलिस्म था, जिसे सभी मिलकर अपनी बुद्धि से पार कर लेते हैं।

उधर रुपकुण्ड झील के रास्ते कालीगढ़ की रानी कलिका, प्रकाश शक्ति पाने के लिये एक तिलिस्म में प्रवेश करती है। उस तिलिस्म का रक्षक एक यक्ष युवान था, जो कलिका से अपनी यक्षावली से, अलग-अलग प्रकार के 5 प्रश्न पूछता है। कलिका एक-एक कर सभी द्वार को पार कर, प्रकाश शक्ति पा जाती है। अंत में खुश होकर युवान, कलिका की पुत्री को हिम शक्ति दे देता है, जिसका प्रयोग वह 20 वर्ष की हो जाने के बाद कर सकती थी।

दूसरी ओर सुयश की टीम का सामना, इस बार रेड आंट और खून की बारिश से होता है। इस बारिश की बूंद शरीर के जिस हिस्से पर गिरती उसे जला देती, पर जेनिथ की वजह से यह मुसीबत भी पार हो जाती है।

उधर कैस्पर को मैग्ना की बहुत याद आती है, तो वह अपनी यादों को ताजा करने, कैस्पर क्लाउड में बने श्वेत महल आ जाता है, जो उसने मैग्ना के लिये ही बनाया होता है, पर श्वेत महल के बाहर कैस्पर की मुलाकात, विक्रम और वारुणी से होती है, जो नक्षत्रलोक के बच्चों को श्वेत महल दिखाने लाये थे। कैस्पर, विक्रम और वारुणी से बात करने के लिये, सभी को लेकर श्वेत महल के अंदर आ जाता है।

उधर खूनी बारिश को पार करने के बाद सभी बर्फ की घाटी में पहुंच जाते हैं, जहां एक छोटा सा पेंग्विन शैफाली को लेकर एक बर्फ की झील में चला जाता है। बर्फ की झील में शैफाली को एक डॉल्फिन, एक सीप तक लेकर जाती है। उस सीप के अंदर मैग्ना की ड्रेस होती है, जो स्वयं ही शैफाली के शरीर पर पहन जाती है, पर उस ड्रेस को पहनने के बाद शैफाली उस सीप के अंदर फंस जाती है, जहां से डॉल्फिन की मदद से वह बाहर आ जाती है।

वहीं दूसरी ओर वेगा के घर में जब धरा को होश आता है, तो वह मयूर से बात करती है, कि वेगा चोर नहीं हो सकता, उसे तो जोडियाक वाँच किसी और ने दी है। धीरे-धीरे धरा और वेगा में अच्छी ताल-मेल हो जाती है। वेगा, वीनस से प्यार का इजहार करने के लिये, धरा के साथ मिलकर वीनस को परेशान करता है। जहां वीनस अपने प्यार का इजहार करते हुए वेगा को अपना रहस्य बता देती है। वह बताती है कि वह सीनोर राज्य की राजकुमारी है और उसके पीछे उसे, उसके भाई लुफासा ने भेजा था। वह बताती है कि लुफासा ही अलग-अलग रुप में अभी तक वेगा पर हमला कर रहा था। यहां वेगा बताता है कि वह वीनस ही नहीं, बल्कि धरा और मयूर का रहस्य भी जानता है। वह धरा को अपनी बहन के रुप में मान लेता है। तभी भूकंप का एक जोरदार झटका आता है, जिससे बचने के लिये सभी अपने घरों से बाहर निकल आते हैं। बाहर आने पर पता चलता है कि वह भूकंप नहीं बल्कि एक उल्का पिंड के गिरने की आहट है। वह उल्का पिंड वांशिगटन डी.सी. से कुछ किलोमीटर दूर समुद्र में गिर जाता है। यह देख धरा और मयूर, वेगा और वीनस से विदा ले वहां से चले जाते हैं।

उधर कैस्पर, विक्रम व वारुणि को श्वेत महल के अंदर ले जाता है, जहां बच्चों के खेलने के लिये बहुत सारी चीजें थीं। कैस्पर, वारुणि को अपनी कहानी सुनाकर, श्वेत महल का नियंत्रण वारुणि के हाथ में दे देता है। वारुणि, कैस्पर को कुछ दिनों के लिये नक्षत्रलोक का मेहमान बनाकर अपने साथ ले जाती है।

दूसरी ओर सुयश की टीम जब बर्फ की घाटी में आगे बढ़ती है, तो इन्हें घाटी में कलाट की विभिन्न प्रकार की मूर्तियां दिखाई देती हैं। वहीं एक मूर्ति के पास रखे एक लकड़ी के यंत्र को हाथ लगाने पर, एक बर्फ का ड्रैगन जाग जाता है, जो इन सभी पर हमला कर देता है। जेनिथ एक बार फिर से नक्षत्रा की शक्ति का उपयोग करके, उस बर्फ के ड्रैगन को हरा देती है। इसके बाद सभी के जोर देने पर जेनिथ, नक्षत्रा के बारे में एक झूठी कहानी सबको सुना देती है।

वहीं एक ओर हिमावत का राजा त्रिशाल, ध्वनि शक्ति प्राप्त करने के लिये मानसरोवर झील के अंदर से होकर शक्तिलोक पहुंच जाता है, जहां एक-एक कर, वह भगवान विष्णु के 5 अस्त्रों की सहायता से, एक मायाजाल को पार करके ध्वनि शक्ति प्राप्त कर लेता है। वहीं एक स्थान पर त्रिशाल को जादुई पुस्तक ध्वनिका के द्वारा, एक पंचशूल वाली महाशक्ति दिखाई देती है, त्रिशाल उस व्यक्ति की वीरता देखकर, उसका विवाह अपनी पुत्री से होने की कल्पना करता है। उसके ऐसा सोचते ही ध्वनिका से एक प्रकाश की किरण निकलकर, सामरा राज्य में स्थित अटलांटिस वृक्ष में समा जाती है।

उधर तौफीक जब रात में सो रहा होता है, तो उसे ऊपर पेड़ से एक विचित्र सी आवाज सुनाई देती है, आवाज का पीछा करते हुए तौफीक पेड़ की कोटर में मौजूद, एक लाल किताब तक पहुंच जाता है। लाल किताब के सबसे पीछे के पन्ने पर 2 आँखें बनी होती हैं, तौफीक जैसे ही उन आँखों को छूता है, वह किताब के अंदर समा जाता है। तौफीक की तेज आवाज सुनकर सभी जाग जाते हैं, तो उन्हें वहां पड़ी वह लाल किताब दिखाई दे जाती है, जिस पर संस्कृत भाषा में वेदान्त रहस्यम लिखा था। सुयश जब वेदान्त रहस्यम को देखता है, तो उसमें सुयश

को, अष्टकोण में बंद एक नन्हा बालक दिखाई देता है, जिसे देखने के बाद सुयश को कुछ आवाजें सुनाई देती हैं और उसके सिर में तेज दर्द होने लगता है। तभी वहां पर शलाका, तौफीक को लेकर आ जाती है। शलाका सुयश से वह किताब मांगती है, पर जैसे ही सुयश वेदान्त रहस्यम शलाका को देने जा रहा होता है, तभी एक दूसरी शलाका उसे ऐसा करने से रोक देती है। सुयश अपनी बुद्धि से असली शलाका को पहचान जाता है। नकली शलाका वहां से भाग जाती है। असली शलाका वहां सुयश के सामने एकएक कर अनगिनत रहस्य खोलती है। वह बताती है कि दूसरी शलाका आकृति थी और सुयश के पूर्वजन्म में जब उसका नाम आर्यन था तो आर्यन की शादी शलाका से हो चुकी थी। वह बताती है कि वेदान्त रहस्यम आर्यन ने ही लिखी थी और इस पुस्तक में वेदालय से निकलने के बाद के रहस्य हैं। सुयश के मांगने पर शलाका उसे वह पुस्तक नहीं देती। वह कहती है कि वह स्वयं पहले इसे पढ़ेगी, फिर इसके बारे में सुयश को बताएगी।

उधर आकृति लैडन नदी के किनारे जाकर, एक सुनहरी हिरनी का अपहरण कर लेती है, जो कि देवी आर्टेमिस को सबसे प्रिय थी। वहां उसे लैडन नदी में सोया हुआ मैग्ना का .गो भी दिखाई देता है। ।

दूसरी ओर सुयश की टीम एक ज्वालामुखी के जाल में फंसकर, एक गहरे कुएं में गिर जाते हैं, जहां से सुयश के दिमाग से वह निकल तो जाते हैं, परंतु इस बार वह सभी ज्वालामुखी के लावे में गिर जाते हैं। ज्वालामुखी के लावे से सभी को शैफाली का बुलबुला बचा लेता है। उस बुलबुले के द्वारा वह ज्वालामुखी के और अंदर पहुंच जाते हैं, जहां शैफाली को एक ड्रैगन का सोने का सिर मिलता है। शैफाली के आँसुओं से वह ड्रैगन का सिर पिघलकर, ज्वालामुखी के लावे में मिल जाता है। शैफाली कहती है कि उसे यह सिर, कुछ अपना सा लग रहा था।

उधर त्रिशाल और कलिका दोनों मिलकर, राक्षस कालबाहु को पकड़ने राक्षसलोक जाते हैं, तभी उन्हें वहां पर राक्षसमाता विद्युम्ना मिलती है। विद्युम्ना कई गुप्त शक्तियों की स्वामिनी होती है, जो अलग-अलग ढंग से परीक्षा लेने के बाद त्रिशाल और कलिका को, अपने मायाजाल भ्रमन्तिका में फंसा देती है, परंतु भ्रमन्तिका में फंसने के पहले, त्रिशाल और कलिका वहां रावण की मूर्ति में मौजूद, एक स्त्री के कंकाल को अपनी शक्तियों से मुक्ति दे देते हैं।

वहीं दूसरी ओर उस अंधेरे कमरे में बंद ऐलेक्स को, मेडूसा की बहन स्थेनो आकर मिलती है। वह बताती है कि शैफाली ही पिछले जन्म में मैग्ना थी। वह कहती है कि विषाका जो बोतल लेकर भागा था, उसमें मैग्ना की स्मृतियां थीं और बिना स्मृतियों के शैफाली उस तिलिस्मा में मारी जायेगी। स्थेनो, ऐलेक्स को माया का दिया हुआ, वशीन्द्रिय शक्ति का घोल पिलाती है, जिससे ऐलेक्स की पांचो इन्द्रियां अत्यन्त शक्तिशाली हो जाती हैं। स्थेनो, ऐलेक्स को वहां से नागलोक में स्थित त्रिआयाम में जाकर, मैग्ना की स्मृतियां वापस लाने को कहती है।

उधर ज्वालामुखी से बचने के बाद सुयश और उसकी टीम एक खोखले पहाड़ में फंस जाते हैं। उस खोखले पहाड़ में हेफेस्टस और हरमीस की मूर्तियां लगी होती हैं। यहां भी एक प्रकार का तिलिस्म होता है, जिसे सभी मिलकर अपने दिमाग से पार कर लेते हैं।

उधर ऐलेक्स त्रिआयाम में पहुंचकर नागफनी और राक्षस प्रमाली को आसानी से हरा देता है। अंत में पिनाक, ऐलेक्स को अपने नागपाश से बांध देता है। ऐलेक्स नागपाश से भी आसानी से छूट जाता है और त्रिआयाम से मैग्ना की स्मृतियां लाने में सफल हो जाता है।

दूसरी ओर सुयश और उसकी टीम, रात बिताने के लिये एक हरे भरे बाग में शरण लेते हैं। वहां सुयश को एक घायल मादा खरगोश दिखाई देती है। उस मादा खरगोश का एक छोटा बच्चा, मादा खरगोश के आसपास घूम रहा होता है। सुयश उस मादा खरगोश की मरहम पट्टी कर, उसे उसके घर में छोड़ देता है, जिससे खुश होकर वह नन्हा खरगोश, सुयश को एक अंगूठी देता है। वह अंगूठी शैफाली के हाथ में बिल्कुल फिट हो जाती है, इसलिये वह अंगूठी शैफाली रख लेती है।

उधर त्रिकाली व्योम को युगाका और कलाट से मिलाती है, जहां व्योम के सामने अपनी और त्रिकाली की शादी का रहस्य खुल जाता है। वहां कलाट सभी को बताता है कि त्रिकाली, त्रिशाल और कलिका की पुत्री है, जिसे नीमा ने उसे पालने को दिया था। वह त्रिकाली को त्रिशाल और कलिका के भ्रमन्तिका में फंसने की बात भी बताता है। त्रिकाली अपने माता-पिता को छुड़ाने की बात करती है, तो कलाट उसे एक बार विद्युम्ना की शक्ति जानने के लिये महावृक्ष से मिलने को कहता है।

वहीं दूसरी ओर ऐलेक्स, सुयश की टीम के पास वापस पहुंचने में कामयाब हो जाता है। वह मैग्ना की स्मृतियां बोतल से निकाल शैफाली को दे देता है, जिससे शैफाली को पूर्वजन्म की सारी बातें याद आ जाती हैं।

उधर वारुणी कैस्पर को नक्षत्रशाला में ले जाती जहां वह बताती है कि पृथ्वी के ऊपर की ओजोन लेयर, एक जगह से क्षतिग्रस्त हो गयी थी, जिसे जब वह ठीक करने गई तो उसे एक अजीब जीव मिला, जो वहां से दूर अंतरिक्ष में किसी को सिग्नल भेज रहा था। वारुणी कैस्पर को उस जीव को दिखाती है। कैस्पर जब अपनी शक्तियों से उस जीव के बारे में पता करता है, तो वह हैरान रह जाता है क्योंकि यह जीव स्वयं उसकी शक्तियों से बनाया गया था। वह वारुणि को बताता है कि पृथ्वी पर कोई बड़ा संकट आने वाला है।

दूसरी ओर सुयश की टीम को एक नहर मिलती है, जिसे पार करना अत्यंत ही मुश्किल था, पर सभी के सम्मिलित प्रयास से वह नहर के जलकवच को पार कर लेते हैं।

उधर शलाका जेम्स और विल्मर से कुछ मांगने को कहती है। विल्मर शलाका से सुनहरी ढाल मांग लेता है। शलाका विल्मर को सुनहरी ढाल दे देती है, परंतु बदले में वह विल्मर की उस

स्थान की स्मृति छीन लेती है। जेम्स शलाका से वहां रहने की आज्ञा मांगता है। शलाका जेम्स को वहां रहने की इजाजत दे देती है।

वहीं दूसरी ओर आकृति की कैद में बंद, रोजर को सनूरा छुड़ा देती है। रोजर भागते समय, सुनहरी हिरनी बनी मेलाइट को भी अपने साथ ले जाता है। भागते समय रोजर को एक जादुई दर्पण में बंद सुर्वया मिलती है। रोजर वहां टंगी तलवार से, दर्पण को तोड़ सुर्वया को भी आजाद कर देता है और सभी को लेकर सनूरा के साथ वहां से भाग जाता है। सनूरा जब लुफासा के पास पहुंचती है, तो सभी को मेलाइट और सुर्वया के बारे में पता चलता है। जहां मेलाइट एक पानी में रहने वाली अप्सरा और देवी आर्टेमिस की सबसे प्रिय निकलती है, वहीं सुर्वया सिंहलोक की राजकुमारी निकलती है। सुर्वया बताती है कि आकृति ने उसकी दिव्यदृष्टि के लिये, उसे अपना बंधक बना रखा था। तभी लुफासा के पास मकोटा का बुलावा आ जाता है और वह मकोटा से मिलने के लिये वहां से चला जाता है।

उधर सुयश अपनी टीम के साथ उड़ने वाली झोपड़ी में प्रवेश कर जाता है, जहां पर एक विचित्र तिलिस्म था। सुयश अपन बुद्धि के बल पर उस तिलिस्म को तोड़, सभी को ले तिलिस्मा में प्रवेश कर जाता है। जहां तिलिस्मा उन सभी के आने का इंतजार कर रहा होता है।

चौथे भाग 'तिलिस्मा' का सारांशः

माया, कैस्पर और मैग्ना को माया सभ्यता के क्रीड़ा स्थल की ओर ले जाती है, जहां वह कैस्पर को ब्रह्म शक्ति व मैग्ना को वृक्ष शक्ति और जीव शक्ति देती है। कैस्पर अपनी ब्रह्म शक्ति से, एक पंखों वाले घोड़े का निर्माण करता है, जिसका नाम वह ज़ीको रखता है। वहीं मैग्ना अपनी शक्तियों से एक महावृक्ष और गो का निर्माण करती है।

वहीं दूसरी ओर हिमालय पर साधना कर रहे हनुमान को, एक नन्हा यति मिलता है, जिसके माता-पिता एक बड़ी सी चट्टान के नीचे दबकर मारे जाते हैं। हनुमान उस नन्हें यति को माया और नीलाभ के विवाह में, भेंट के तौर पर माया को दे देते हैं। माया उस नन्हें यति का नाम हनुका रखती है।

उधर सुयश सहित सभी लोग तिलिस्मा में प्रवेश कर जाते हैं। जहां कैश्वर सभी को एक नीलकमल की पहली पंखुड़ी तोड़ने के लिये कहता है। सभी के सम्मिलित प्रयास से वह तिलिस्मा के पहले द्वार को पार कर जाते हैं।

वहीं एक ओर एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा के फेरोना ग्रह पर, वहां का कमांडर प्रीटेक्स, राजा एलान्का को बताता है कि उसने युवराज ओरस को पृथ्वी पर देख लिया है और उसे प्राप्त करने के लिये, उसने एण्ड्रोवर्स पॉवर को भेज दिया है।

उधर 6,000 वर्ष पहले विद्युम्ना, तपस्या के द्वारा महादेव को प्रसन्न कर, उनसे त्रिशक्ति का वरदान मांग लेती है। जिसके फलस्वरुप महादेव, विद्युम्ना को एक त्रिमुखी सर्पदण्ड देते हैं। जब विद्युम्ना वरदान लेकर जंगल से जा रही होती है, तो उसे एक सफेद रंग का मयूर नृत्य करते हुए दिखाई देता है। बाद में पता चलता है कि वह मयूर राक्षराज बाणकेतु है। विद्युम्ना, बाणकेतु पर मोहित हो, उससे विवाह का प्रस्ताव देती है।

वहीं दूसरी ओर तिलिस्मा में सुयश की टीम के सामने, एक नेवला मायाजाल बुनकर, उन्हें फंसाने की कोशिश करता है, पर सभी आसानी से नेवले को पराजित कर उस द्वार को पार कर लेते हैं।

उधर एक ओर शलाका वेदान्त रहस्यम् नामक किताब को पढ़कर, आर्यन के कुछ रहस्य को जान जाती है, जिसमें आर्यन अपने और आकृति के पुत्र को, एक काँच के अष्टकोण में बंदकर, जमीन में छिपा रहा होता है। शलाका उस स्थान के बारे में जानकर, उस पुत्र को ढूंढने का विचार करती है।

वहीं एक ओर सुयश और उसकी टीम को तिलिस्मा में एक खतरनाक ऑक्टोपस का सामना करना पड़ता है। सभी थोड़ी सी मुश्किलों का सामना करने के बाद, इस ऑक्टोपस को भी पराजित कर, इस द्वार को पार कर लेते हैं।

उधर धरा और मयूर समुद्र में गिरे उल्का पिंड की जांच करने के लिये, अटलांटिक महासागर में जाते हैं, जहां उन्हें पता चलता है, कि वह उल्का पिंड असल में एक अंतरिक्ष यान है। वहां दोनों का सामना अंतरिक्ष के 2 शक्तिशाली जीव एलनिको और एनम से होता है। एलनिको अपनी चुम्बकीय शक्तियों का प्रयोग कर, धरा व मयूर को बेहोश कर देता है और उन्हें उठाकर अपने साथ अंतरिक्ष यान में लिये जाता है।

उधर वुल्फा पिरामिड में बैठकर कुछ काम कर रहा होता है, कि तभी उसे स्क्रीन पर एक ऊर्जा द्वार दिखाई देता है। वुल्फा उस ऊर्जा द्वार का पीछा कर, घायल पड़े गोंजालो तक पहुंच जाता है। तभी वुल्फा को एक खतरनाक जीव दिखाई देता है, जो उस द्वार से निकलकर आसमान में उड़ जाता है।

वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी एक जलदर्पण के मायाजाल में फंस जाते हैं, जहां वह एक विशाल कछुए की पीठ पर रखे एक पिंजरे में कैद होते हैं। यहां शैफाली और ऐलेक्स के प्रयासों से, सभी बचकर इस द्वार को पार कर जाते हैं।

उधर कैस्पर, वारुणि को कैश्वर और तिलिस्मा के बारे में बताता है। वह वारुणि को एक महायुद्ध का संकेत देता है और उसे उस महायुद्ध से निपटने के लिये, कुछ तैयारियां करने को कहता है।

वहीं एक ओर सुयश सहित सभी चींटियों के संसार में फंस जाते हैं, जहां उन्हें 4 चाबियों के द्वारा, तिलिस्मा के द्वार को खोलना था। क्रिस्टी और शैफाली की मदद से सभी 1 चाबी प्राप्त कर लेते है, पर नदी के अंदर मौजूद आस्ट्रेलियन बुलडाग चींटी की वजह से सभी बुरी तरह से फंस जाते हैं।

उधर कलाट, वेगा और युगाका को बचपन में महावृक्ष के पास छोड़ जाता है। जहां वेगा महावृक्ष के अंदर प्रवेश कर जाता है। वेगा को महावृक्ष के अंदर, एक स्वप्जतरु की दुनिया दिखाई देती है। जहां पर वेगा एक किताब सम्मोहनास्त्र से, सम्मोहिनी विद्या सीख जाता है। उधर महावृक्ष, युगाका को वृक्षशक्ति प्रदान करता है, जिससे युगाका वृक्षों के दर्द को भलि-भांति समझने लगता है।

दूसरी ओर शैफाली के दिमाग लगाने से सुयश सहित सभी, चींटियों के उस संसार को पार करने में सफल हो जाते हैं।

उधर आकृति विल्मर से सुनहरी ढाल छीनने के लिये, उसका पीछा करते हुए, एक पानी के जहाज पर जा पहुंचती है और विल्मर को जादू से सीगल पक्षी बनाकर, उससे सुनहरी ढाल छीन लेती है। पर तभी मकोटा अपना नीलदण्ड आकृति के पास से वापस बुला लेता है, जिससे आकृति उस जहाज से भाग नहीं पाती। तभी आकृति को विक्रम बेहोशी की हालत में, उस जहाज पर मिलता है, जिसकी स्मृति जा चुकी होती है। आकृति, विक्रम के सामने वारुणी होने का नाटक कर, उसे अपने साथ लेकर न्यूयार्क चली जाती है।

इधर आर्टेमिस गुस्साकर ओरैकल से आकृति का पता पूछती है, पर ओरैकल कहती है कि अब मेलाइट को भूल जाओ और आकृति का पीछा करना छोड़ दो।

वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी स्टेचू ऑफ लिबर्टी के पास पहुंच जाते हैं, जहां उन्हें स्टेचू ऑफ लिबर्टी में कुछ अंतर ढूंढकर उसे सही करना था। सभी के सम्मिलित प्रयासों से मायाजाल का यह भाग भी पार हो जाता है।

उधर मकोटा, लुफासा को अपने विश्वास में लेने के लिये, उसे पिरामिड दिखाने ले जाता है, जहां लुफासा को पता चलता है कि उसके माता-पिता, मुफासा और कागोशी का कत्ल कलाट ने किया था। लुफासा को पिरामिड में कुछ और रहस्यों का भी पता चलता है।

वहीं एक ओर सुयश सहित सभी एक सपनों के संसार में प्रवेश कर जाते हैं, जहां वह 5 देवताओं की शक्तियों का प्रयोग कर, तिलिस्मा के उस भाग को भी पार कर लेते हैं।

उधर वीनस के कमरे में बहुत से डरे हुए पंछी प्रवेश कर जाते हैं। जब वीनस खिड़की से देखती है, तो उसे पूरे शहर में मरे हुए पक्षी सड़क पर पड़े हुए दिखाई देते हैं। तभी समुद्र के कुछ जीव भी, विकृत आकार लेकर शहर पर हमला कर देते हैं। वीनस और वेगा अपनी शक्तियों का प्रयोग करके उन जीवों को मार देते हैं।

उधर सुयश सहित सभी लोग, 4 ऋतुओं के जाल में फंस जाते हैं, जहां पहली ऋतु से टकराने के लिये वह सभी रुस के मास्को शहर में पहुंच जाते हैं। यहां ऐलेक्स की समझदारी और तौफीक के निशाने की वजह से, सभी यह द्वार भी पार कर लेते हैं।

उधर रोजर को अपनी नाभि से एक तेज सुनहरी रोशनी निकलती दिखाई देती है, पर वह रोशनी मेलाइट के स्पर्श करते ही गायब हो जाती है। मेलाइट, सनूरा से इस रहस्य के बारे में बता देती है। इस स्थान पर सुर्वया भी अपने कई रहस्यों को प्रकट करती है, पर तभी अराका द्वीप पर कोई हमला बोल देता है, जिसकी वजह से सभी भागकर समुद्र के किनारे की ओर चल देते हैं।

वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी ग्रीष्म ऋतु के मायाजाल में फंस जाते हैं, जहां एक गेम के अंदर मौजूद पृथ्वी की रोटेशन रुक जाती है। सभी एक-एक कर मुसीबतों को पार करते हुए, ग्रीष्म ऋतु को भी पार कर लेते हैं। उस मायाजाल में एक स्थान पर जेनिथ एक जहरीली गैस में फंसकर गिर जाती है। तभी एक खूबसूरत योद्धा प्रकट होकर जेनिथ को बचाकर गायब हो जाता है।

वहीं एक ओर लुफासा और वीनस अपने बचपन में एक कछुए का पीछा करते हुए, अराका द्वीप के एक गुप्त स्थान पर पहुंच जाते हैं, जहां उन्हें जीव शक्ति प्राप्त हो जाती है।

उधर हिमालय पर हनुका छिपते हुए, रुद्रलोक पहुंच जाता है और नीलाभ को माया के बारे में बता देता है। नीलाभ हनुका को रक्त भैरवी की डिबिया देता है, जिसका प्रयोग वह हनुका से समय आने पर, करने को कहता है।

वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी शीत ऋतु के जाल में फंस जाते हैं, जहां पर एक अश्वमानव और समुद्री घोड़ा मायाजाल बुनकर सभी को फंसा देते हैं, पर सभी की सम्मिलित शक्ति से वह इस द्वार को भी पार कर लेते हैं।

उधर पुराने समय में सुयश अपने दादाजी के साथ सूर्यदेव के मंदिर जाता है, जहां एक तितली का पीछा करते हुए सुयश खाई में गिरने लगता है, परंतु सूर्यदेव सुयश को, अपनी किरणों से हवा में थाम कर उसे बचा लेते हैं।

दूसरी ओर शलाका जेम्स से अपने कई रहस्यों के बारे में बताती है और उसे अपने अंतरिक्ष यान आर्केडिया को चलाने की ट्रेनिंग देने लगती है।

उधर महावृक्ष व्योम से परीक्षा लेने के लिये, उसे एक नकली विद्युम्ना के जाल में फंसा देता है, पर व्योम सभी मुसीबतों को पार कर विद्युम्ना को हरा देता है। जिससे महावृक्ष उसे विद्युम्ना के पास जाने की इजाजत दे देता है।

वहीं एक ओर अलबर्ट टेरोसोर से किसी तरह बचकर निकलने में सफल हो जाता है, पर वह एक अंधेरे कुएं में गिर जाता है। उस कुएं में अलबर्ट को एक बिल्ली जैसी शक्ल वाली देवी की प्रतिमा दिखाई देती है, जिसके हाथों में पकड़े पात्र में विचित्र जल था। अलबर्ट उस जल को पी जाता है।

अब आगे पढ़िये ....

ooooo

चैपटर-2

वसंत ऋतु

तिलिस्मा 4.4

सुयश सहित सभी लोग अब जमीन पर चमक रहे, ग्रीनलैंड के स्थान पर जाकर खड़े हो गये, जहां वसंत ऋतु से इनका सामना होना था। सभी अब गायब होकर ग्रीनलैंड के एक स्थान पर पहुंच गये। परंतु उस स्थान पर नजर पड़ते ही, सभी बुरी तरह से हैरान हो गये।

वह एक बहुत सुंदर सी घाटी थी।

उस स्थान पर पेड़, पर्वत, झील, परियां, तितली, झरना आदि सबकुछ था, जो कि एक प्रकृति की सुंदरता का कारक होता है, परंतु किसी भी चीज में कोई रंग नहीं था, यानि की सभी चीजें 70 के दशक के टेलीविजन की तरह ब्लैक एण्ड व्हाइट थीं।

इस स्थान को देख क्रिस्टी के मुंह से हंसी छूट गई।

“लगता है यह कैश्वर अब हमें किसी पुराने से टेलीविजन के अंदर ले आया है? जहां कि हर चीज का रंग उड़ गया है।” क्रिस्टी ने हंसते हुए कहा।

“मैं तो समझा था कि वसंत ऋतु में सबकुछ खुशनुमा होगा?” ऐलेक्स ने कहा- “पर यहां का तो अंदाज ही निराला लग रहा है।"

अब सबकी नजर उस बड़ी सी घाटी की ओर गई। सभी देखना चाहते थे कि वहां पर क्या-क्या है? और उस द्वार को किस प्रकार पार किया जा सकता है?

उस स्थान पर एक ओर 4 बड़े से ड्रम रखे थे। 3 ड्रम में लाल, नीला और पीला रंग था। एक ड्रम पूरी तरह से खाली था।

उस स्थान पर हवा में, एक 6 फुट का ड्रोन घूम रहा था, जिसके नीचे एक पिंजरा टंगा था और उस पिंजरे में एक परी बैठी थी, जिसने लाल रंग के वस्त्र पहन रखे थे। वह ड्रोन उस पिंजरे को लिये चारो ओर हवा में उड़ रहा था।

दूसरी ओर एक बड़ी सी चट्टान से, एक पानी का झरना गिर रहा था। उस झरने के पानी के एकत्र होने से, नीचे एक सुंदर परंतु छोटी सी झील बन गई थी।

उस झील के बीच में एक सफेद रंग का बड़ा सा लिली का फूल तैर रहा था।

उस फूल के ऊपर दूसरा पिंजरा रखा था, जिसमें नीले रंग के वस्त्र पहने एक दूसरी परी बैठी थी।

तीसरा पिंजरा गायब होकर बार-बार अलग-अलग स्थानों पर दिखाई दे रहा था। तीसरे पिंजरे में पीले रंग के वस्त्र पहने एक परी बैठी थी।

चौथी परी किसी पिंजरे में नहीं थी, बल्कि हवा में उपस्थित 6 फुट ऊंचे, एक सफेद रंग के हीरे में बंद थी। उस हीरे के नीचे एक संगमरमर के पत्थर का, 4 फुट का वर्गाकार टुकड़ा जमीन में लगा था।

चौथी परी ने हरे रंग के वस्त्र पहने थे।

“यहां के मायाजाल को तो देखकर ही समझ में आ रहा है, कि हमें यहां करना क्या है?" जेनिथ ने कहा।

“यह एक घाटी है, जिसके सारे रंगों के लिये ये 4 परियां जिम्मेदार हैं, परंतु किसी ने इन 4 परियों को अलग-अलग जगहों पर कैद कर दिया है?” सुयश ने

कहा- “हमें इन सभी परियों को छुड़ाकर, प्रकृति के इन रंगों को भरना होगा।

“सही कहा आपने कैप्टेन।" तौफीक ने कहा- “और जैसे ही हम इन रंगों को प्रकृति में भर देंगे, स्वतः ही प्रकृति पर वसंत ऋतु का प्रभाव हो जायेगा।"

“तो फिर देर ना करते हुए इस द्वार को शुरु करते हैं।” सुयश ने कहा- “पहले लाल रंग का ड्रम रखा है, तो हम पहले लाल रंग की परी को छुड़ाने की कोशिश करते हैं।”

“पर कैप्टेन, हवा में उड़ रहे उस ड्रोन की गति बहुत ज्यादा है, ऐसे में हम उस ड्रोन तक कैसे पहुंच पायेंगे?" ऐलेक्स ने कहा।

ऐलेक्स की बात सुनकर सुयश ध्यान से उस ड्रोन की गति का अध्ययन करने लगा।

उस ड्रोन की गति कम से कम 60 किलोमीटर प्रति घंटा के आस-पास थी। ऐसे में उसे पकड़ पाना इतना भी आसान नहीं था।

तभी सुयश की नजर एक ऊंची सी चट्टान की ओर गई। ड्रोन बार-बार घूमते हुए उस चट्टान के पास से गुजर रहा था।

उस चट्टान के नीचे की ओर झील का पानी था। यह देख सुयश के दिमाग में एक युक्ति आ गई।

"हममें से किसी को उस चट्टान पर जाकर खड़ा होना होगा?” सुयश ने चट्टान की ओर इशारा करते हुए कहाऔर जैसे ही ड्रोन नीचे से निकलेगा, चट्टान से कूदकर उस ड्रोन पर सवार होने की कोशिश करनी होगी। क्योंकि ड्रोन पर लगे पंखे, उसके प्लेटफार्म के नीचे हैं, इसलिए वह पंखे हमें, किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकते। मुझे तो यह तरीका ही आसान लगा क्योंकि अगर कोई नीचे गिर भी गया? तो नीचे झील का पानी होने की वजह से उसे चोट नहीं लगेगी।"

“ठीक है कैप्टेन, तो मैं चट्टान पर जाकर ड्रोन पर कूदने की कोशिश करती हूं।” क्रिस्टी ने स्वयं से आगे आते हुए कहा और सुयश की स्वीकृति पाकर उस चट्टान की ओर बढ़ गई।

कुछ ही पलों में क्रिस्टी चट्टान पर थी।

अब क्रिस्टी की नजर पास आ रहे ड्रोन की ओर थी। कुछ देर तक क्रिस्टी ध्यान से ड्रोन को देखती रही और उसकी गति का पूर्ण अंदाजा लगा लेने के बाद, क्रिस्टी ने ड्रोन पर छलांग लगा दी।

एक पल के लिये ऐसा लगा मानो क्रिस्टी का शरीर, किसी सुपरगर्ल की भांति हवा में उड़ रहा हो।

पर जैसे ही ड्रोन इस बार चट्टान के समीप आया, उसकी गति अचानक से बढ़ गई और वह क्रिस्टी के नीचे से, उसे चिढ़ाता हुआ निकल गया।

एक पल के लिये क्रिस्टी की आँखों में आश्चर्य के भाव उभरे, परंतु इससे पहले कि क्रिस्टी ज्यादा आश्चर्य व्यक्त कर पाती, उसका शरीर ‘छपाक' की तेज आवाज करते हुए झील के पानी में आ गिरा।

क्रिस्टी ने पानी में एक डाइव मारी और झील से निकल कर बाहर आ गई।

क्रिस्टी ने सुयश से कुछ बोलने की कोशिश की, पर सुयश हाथ के इशारे से उसे रोकते हुए बोला- “कुछ बोलने की जरुरत नहीं है क्रिस्टी, हम सभी ने देखा कि कैसे ड्रोन की स्पीड एकाएक तेज हो गई थी? अब यह साफ हो गया कि यह एक साधारण ड्रोन नहीं, बल्कि एक स्मार्ट ड्रोन है, जो अपने पर आ रहे खतरों को देख, अपने अंदर स्वयं बदलाव कर सकता है। .... क्या अब किसी के पास इस ड्रोन को पकड़ने का कोई दूसरा तरीका है?"

"हां कैप्टेन।” इस बार ऐलेक्स ने अपना हाथ उठाते हुए कहा- “मुझे अभी-अभी यहां सामने की ओर कुछ अदृश्य सीढ़ियां बनी दिखाई दीं हैं, ड्रोन उन सीढ़ियों के नीचे से बार-बार निकल रहा है। जिस चट्टान से क्रिस्टी नीचे कूदी, वह चट्टान काफी ऊंचाई पर थी, जिससे क्रिस्टी को ड्रोन को पकड़ने के लिये, काफी पहले कूदना पड़ा था, पर उन सीढ़ियों और ड्रोन के बीच ज्यादा फासला नहीं है, इसलिये मुझे लगता है कि उन सीढ़ियों के माध्यम से आसानी से ड्रोन को पकड़ा जा सकता है?"

यह कहकर ऐलेक्स ने एक दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा।

“ठीक है ऐलेक्स, तुम भी कोशिश करके देख लो, हो सकता है कि इस तरीके से ही लाल परी के ड्रोन को पकड़ा जा सके?” सुयश ने ऐलेक्स को आज्ञा देते हुए कहा।

सुयश की बात सुन ऐलेक्स उन सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

कुछ ही देर में ऐलेक्स उन सीढ़ियों पर चढ़कर, एक ऐसे स्थान पर खड़ा हो गया, जिसके नीचे से ड्रोन बार-बार निकल रहा था।

शैफाली के सिवा बाकी किसी को, अदृश्य सीढ़ियां दिखाई नहीं दे रहीं थीं, पर ऐलक्स को वह सब,अब हवा में एक स्थान पर खड़े देख रहे थे।